चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जीन्द

(प्रदेश विधायिका एक्ट 28, 2014 के तहत)

स्नातकोत्तर हिन्दी पाठ्यचर्या

📖 *"भाषा ही संस्कृति की आत्मा है"*

(हिन्दी को वैश्विक विमर्श में सहभागी बनाने की ओर एक सशक्त शैक्षणिक संकल्प)

पाठ्यचर्या का स्वरूप

घटक	विवरण
विश्वविद्यालय का नाम	*चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जीन्द*
विभाग	*हिन्दी विभाग*
पाठ्यक्रम स्तर	*स्नातकोत्तर (एम० ए० – हिन्दी)*
पाठ्यक्रम प्रारंभ	*सत्र 2024–25 से चरणबद्ध रूप से*
पाठ्यक्रम की रूपरेखा	*राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुरूप*
कुल सेमेस्टर	*चार (प्रथम से चतुर्थ)*
कुल क्रेडिट	*96 (प्रत्येक सेमेस्टर में औसतन 24 क्रेडिट)*
शिक्षण माध्यम	*हिन्दी*

🏛 पाठ्यक्रम की संरचना और मुख्य तत्त्व (एक प्रभावी शैक्षणिक प्रयास)

1. पाठ्यचर्या की संरचना एवं दृष्टिकोण

- 📚 *बहुविकल्पीय एवं लचीली संरचना – विषय चयन की स्वायत्तता*
- 🧭 *NEP–2020 आधारित नवीनतम पाठ्यक्रम रूपरेखा*
- 🔄 *360° मूल्यांकन दृष्टिकोण – परीक्षा, संवाद, परियोजना, प्रस्तुति एवं शोध*
- 🧠 *सैद्धांतिक गहराई एवं व्यावहारिक दक्षता का समन्वय*

---

2. अध्ययन की विविधता और गहराई

- 🌍 *हरियाणा की लोक परंपरा से लेकर विश्व साहित्य तक का समावेश*
- 🧩 *अंतरविषयी (Interdisciplinary) पाठ्यक्रम*
- 📘 *शोध, संवाद और सृजन की त्रिवेणी*
- ⚖️ *अकादमिक गहराई और सामाजिक प्रासंगिकता का संतुलन*

---

3. नवाचार और मूल्यपरक शिक्षण

- 🎓 *शोध एवं लघु शोध-कार्य आधारित मूल्यांकन*
- 💼 *ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी का प्रशिक्षण – व्यावसायिक जीवन हेतु तैयार करना*
- 🎤 *परिसंवाद, सेमिनार एवं प्रोजेक्ट प्रस्तुति आधारित अभ्यास – वैचारिक अभिव्यक्ति का मंच*
- 📄 *शैक्षिक अनुभवों में इंटर्नशिप, संवाद, शोध और प्रयोजनमूलक हिन्दी को केन्द्रीय स्थान प्रदान किया गया है।*

📝 ***टिप्पणी :*** *यह पाठ्यचर्या विश्वविद्यालय के अधिनियम एवं शैक्षिक परिषद की संस्तुतियों के अनुरूप, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की भावना को समाहित करते हुए विकसित की गई है।*

चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जीन्द

(प्रदेश विधायिका एक्ट 28, 2014 के तहत)

स्नातकोत्तर हिन्दी पाठ्यचर्या

(राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के आलोक में नवाचारशील एवं वैश्विक मानकों पर आधारित)

सत्र 2024–25 से चरणबद्ध रूप से प्रभावी

पाठ्यचर्या स्वरूप	पाठ्यचर्या संहिता	पाठ्यचर्या नामांकन	क्रेडिट	शिक्षण	परीक्षा योजना			
				घण्टे/प्रति सप्ताह	परीक्षा अंक	आंतरिक मूल्यांकन	कुल अंक	समय
सेमेस्टर-I								
CC-1	M24-HIN-101	हिन्दी साहित्य का इतिहास	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
CC-2	M24-HIN-102	मध्ययुगीन हिन्दी काव्य	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
CC-3	M24-HIN-103	लोक साहित्य	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
CC-4	M24-HIN-104	हिन्दी नाटक और निबंध	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
DEC-1 Select Any One Option	M24-HIN-105	कबीरदास	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
	M24-HIN-106	तुलसीदास	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
🎤 सेमिनार	M24-HIN-109	परिसंवाद	2	2	50		50	
सेमेस्टर-II								
CC-5	M24-HIN-201	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
CC-6	M24-HIN-202	आधुनिक हिन्दी कविता	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
CC-7	M24-HIN-203	हरियाणवी लोक साहित्य	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
CC-8	M24-HIN-204	हिन्दी कथा साहित्य	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
DEC-2 Select Any One Option	M24-HIN-205	प्रेमचन्द	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
	M24-HIN-206	हरिशंकर परसाई	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
CHM	M24-CHM-201	संवैधानिक, मानवीय, नैतिक मूल्य और बौद्धिक संपदा अधिकार	2	2	35	15	50	2 घण्टे
💼 इंटर्नशिप	M24-INT-200	सेमेस्टर-II के बाद ग्रीष्मावकाश में 4–6 सप्ताह की अवधि की इंटर्नशिप होगी।	4				100	
सेमेस्टर-III								
CC-9	M24-HIN-301	साहित्यशास्त्र	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
CC-10	M24-HIN-302	हिन्दी भाषा और लिपि	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
DEC-3 Select Any One Option	M24-HIN-303	भारतीय साहित्य	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
	M24-HIN-304	हरियाणवी भाषा और साहित्य	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे

DEC-4 Select Any One Option	M24-HIN-305	समकालीन हिन्दी कविता	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
	M24-HIN-306	कथेतर गद्य साहित्य	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
DEC-5 Select Any One Option	M24-HIN-307	सृजनात्मक लेखन	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
	M24-HIN-308	अनुवाद विज्ञान	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
OEC	M24-HIN-309	हिन्दी भाषा अनुप्रयोग	2	2	35	15	50	2 घण्टे
सेमेस्टर-IV								
CC-11	M24-HIN-401	शोध-प्रविधि	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
CC-12	M24-HIN-402	भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
DEC-6 Select Any One Option	M24-HIN-403	साहित्य और विमर्श	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
	M24-HIN-404	हिन्दी आलोचना	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
DEC-7 Select Any One Option	M24-HIN-405	साहित्य की वैचारिक भूमि	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
	M24-HIN-406	विश्व साहित्य	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
DEC-8 Select Any One Option	M24-HIN-407	हिन्दी पत्रकारिता	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
	M24-HIN-408	हिन्दी सिनेमा और रंगमंच	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
EEC	M24-HIN-417	प्रयोजनमूलक हिन्दी	2	2	35	15	50	2 घण्टे
लघु शोध-कार्य चयन उपरान्त पाठ्यचर्चा योजना (विकल्प–I)								
CC-11	M24-HIN-401	शोध-प्रविधि	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
DEC-6 Select Any One Option	M24-HIN-403	साहित्य और विमर्श	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
	M24-HIN-404	हिन्दी आलोचना	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
EEC	M24-HIN-417	प्रयोजनमूलक हिन्दी	2	2	35	15	50	2 घण्टे
Project work	M24-HIN-418	लघु शोध-कार्य	12		200 + 100		300	
लघु शोध-कार्य चयन उपरान्त पाठ्यचर्चा योजना (विकल्प–II)								
DEC-6 Select Any One Option	M24-HIN-403	साहित्य और विमर्श	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
	M24-HIN-404	हिन्दी आलोचना	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
DEC-7 Select Any One Option	M24-HIN-405	साहित्य की वैचारिक भूमि	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
	M24-HIN-406	विश्व साहित्य	4	3+1 (ट्यूटोरियल)	70	30	100	3 घण्टे
EEC	M24-HIN-417	प्रयोजनमूलक हिन्दी	2	2	35	15	50	2 घण्टे
Project work	M24-HIN-418	लघु शोध-कार्य	12		200 + 100		300	

.

आन्तरिक मूल्यांकन योजना

हिन्दी विभाग : आन्तरिक मूल्यांकन योजना (Internal Assessment Scheme – Department of Hindi)

कोर्स क्रेडिट	अंक विभाजन तालिका			आन्तरिक मूल्यांकन कुल अंक	सत्रांत (मुख्य) परीक्षा अंक	कुल अंक
	कक्षा सहभागिता	लेखन कार्य/प्रस्तुति	मध्यावधि परीक्षा			
2	4	4	7	15	35	50
4	5	10	15	30	70	100

नियत कार्य (Assignment Work) हेतु निर्देश

- प्रत्येक सत्र में पाठ्यचर्चा के अंतर्गत प्रदत्त नियत कार्य का लेखन एवं मौखिक प्रस्तुति **अनिवार्य** है।
- नियत कार्य केवल **प्रदत्त विषय** के अनुरूप एवं **विभागीय नियमावली** के अनुसार ही किया जाए।
- विद्यार्थी को कार्य निर्धारित तिथि तक संबंधित प्राध्यापक को **स्वहस्ताक्षरित प्रति** के रूप में अनिवार्यतः सौंपना होगा।
- केवल **विद्यार्थी द्वारा स्वतः हस्तलिखित** कार्य ही स्वीकार्य है; टंकित या अन्य व्यक्ति द्वारा लिखित कार्य **अमान्य** होगा।
- लेखन हेतु केवल नीले रंग की स्याही तथा कोरे, सफेद, A4 आकार के एकतरफा पृष्ठों का प्रयोग अनिवार्य है।
- **न्यूनतम 10 एकतरफा हस्तलिखित पृष्ठों** का संयोजन **अनिवार्य** है।
- सभी पृष्ठ क्रमांक सहित, स्वच्छ एवं स्पष्ट हस्तलेखन में, सुव्यवस्थित रूप से संयोजित किए जाएं।
- लेखन में केवल मानक **हिंदी भाषा** एवं **विराम चिह्नों** का ही प्रयोग करें; अन्य भाषा प्रतीकों या संकेतों का प्रयोग वर्जित है।
- **अधोरेखांकन (Underline)** और **रंगीन स्याही, पेंसिल, हाईलाटर** आदि का प्रयोग **पूर्णतः निषिद्ध** है।
- असाइनमेंट पहले पृष्ठ पर विद्यार्थी के **पूरा नाम, रोल नंबर, कक्षा, दिनांक** एवं **हस्ताक्षर** स्पष्ट रूप से अंकित होना आवश्यक है।

मध्यावधि परीक्षा (Mid-Term Exam) हेतु निर्देश

- **मध्यावधि परीक्षा** (Mid-Term Exam) में उपस्थित होना आंतरिक मूल्यांकन का अनिवार्य अंग है।
- परीक्षा की **निर्धारित तिथि और समय का पूर्ण पालन** अपेक्षित है; **विलंबित परीक्षा स्वीकृत नहीं** की जाएगी।
- केवल अत्यंत वैध कारणों पर विभागाध्यक्ष/प्राचार्य की लिखित अनुमति द्वारा ही पुनः परीक्षा की स्वीकृति दी जा सकती है।
- परीक्षा के दौरान **किसी भी अनुचित साधन** (जैसे नकल आदि) के प्रयोग पर **सख्त अनुशासनात्मक कार्यवाही** की जाएगी।

आंतरिक मूल्यांकन के घटक (Components of Internal Assessment)

- आंतरिक मूल्यांकन में विद्यार्थी की संपूर्ण अकादमिक, बौद्धिक और व्यवहारिक भागीदारी को ध्यान में रखते हुए निम्न घटकों के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा:
  - **कक्षा सहभागिता (Class Participation)**
  - **लेखन कार्य एवं प्रस्तुति (Written Assignment & Oral Presentation)**
  - **मध्यावधि परीक्षा (Mid-Term Examination)**
  - **विभागीय गतिविधियों में सहभागिता (Participation in Departmental Activities)**

सक्रिय शैक्षणिक सहभागिता हेतु निर्देश (Guidelines for Active Academic Engagement)

- नियमित उपस्थिति, समय अनुपालना एवं सेमिनार/कार्यशालाओं में सक्रिय प्रस्तुति मूल्यांकन का **महत्वपूर्ण हिस्सा** है।
- विद्यार्थी को विभागीय निर्देशों, तिथियों, सूचनाओं व समय-सारणी से **स्वयं को अद्यतन** रखना अनिवार्य है।
- अनुशासनहीनता, निर्देशों की अवहेलना या नियत समय की उपेक्षा में विद्यार्थी का मूल्यांकन निरस्त किया जा सकता है।
- विभागीय आयोजनों में सक्रिय सहभागिता करने वाले विद्यार्थी को अतिरिक्त अंक/प्रशस्ति-पत्र द्वारा प्रोत्साहित किया जाएगा।
- सभी विद्यार्थियों से यही अपेक्षा है कि जब भी आप कोई लेखन प्रस्तुत करें, तो वह केवल पुस्तकीय 📚 जानकारियों का संकलन न होकर आपकी अपनी समझ, विश्लेषण, दृष्टिकोण और वैचारिक परिपक्वता का जीवंत प्रमाण हो—एक ऐसा लेखन प्रस्तुत करें जो विषयवस्तु की पुनरावृत्ति न होकर आपकी दृष्टि और अनुभव से समृद्ध, मौलिक एवं विश्लेषणपरक हो। यही सजग अध्ययनशीलता एक साधारण छात्र को एक चिंतनशील विद्यार्थी 👨‍🎓 बनाती है।

🔔 **नोट : हिन्दी विभाग सभी विद्यार्थियों को उत्कृष्टता की दिशा में प्रेरित करता है तथा अपेक्षा करता है कि आप आंतरिक मूल्यांकन प्रक्रिया को केवल एक औपचारिक दायित्व नहीं, बल्कि आत्मबोध, बौद्धिक विकास और सृजनात्मक चेतना के सशक्त अवसर के रूप में स्वीकार करें।** 🎓

सेमेस्टर-I CC-1

M24-HIN-101 हिन्दी साहित्य का इतिहास

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हिंदी साहित्येतिहास की परंपरा, प्रवृत्तियों, कालविभाजन और काव्यधाराओं का सम्यक् एवं आलोचनात्मक बोध कराना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

101.1 विद्यार्थी हिंदी साहित्येतिहास की रचनात्मक परंपरा, लेखन-पद्धतियों एवं पुनर्लेखन की समस्याओं को समझ सकेंगे।

101.2 आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकाल की साहित्यिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।

101.3 प्रमुख साहित्यकारों, काव्य प्रवृत्तियों एवं उनके साहित्यिक योगदान की पहचान कर सकेंगे।

101.4 विभिन्न साहित्यिक कालखंडों की तुलना कर उनके वैचारिक एवं सौंदर्यात्मक विकास को समझ सकेंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर विश्लेषणात्मक, तार्किक संरचना और संदर्भ-प्रदत्त आलोचनात्मक रूप में देना होगा, जिसमें परिपक्वता परिलक्षित हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 48 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक उत्तर लगभग 150 से 200 शब्दों में, संक्षिप्त, तथ्यपरक एवं विश्लेषणात्मक हो ताकि विद्यार्थी की विषयवस्तु पर पकड़ का आकलन किया जा सके। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे, जिनके उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में अपेक्षित होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु साहित्य के इतिहास पर केंद्रित विषय निर्धारित किए जाएं, जो विद्यार्थियों की विश्लेषण क्षमता, पुनर्विचारशीलता और आलोचनात्मक दृष्टि को विकसित करें।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 इतिहास और साहित्येतिहास दर्शन; हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परम्परा; हिंदी साहित्येतिहास पुनर्लेखन की समस्याएँ; हिंदी साहित्येतिहास का काल विभाजन और नामकरण; आदिकाल की पृष्ठभूमि और परिवेश; आदिकालीन साहित्य का वर्गीकरण; आदिकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियाँ।

इकाई-2 भक्तिकाल की पूर्वपीठिका एवं तत्कालीन परिवेश; निर्गुण भक्ति का स्वरूप; संतकाव्य धारा : प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि; सूफीकाव्य उद्गम-स्त्रोत; सूफीकाव्य : प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि।

इकाई-3 वैष्णव भक्ति का उदय और वैशिष्ट्य; रामकाव्य : परम्परा, प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि; हिन्दी कृष्णभक्ति काव्य की वैचारिक पृष्ठभूमि; कृष्णभक्ति विविध सम्प्रदाय; कृष्ण काव्य : प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि; भक्तिकाल की उपलब्धियाँ।

इकाई-4 रीतिकाल : पृष्ठभूमि एवं परिवेश; रीति कवियों का आचार्यत्व; रीतिबद्ध काव्य : प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि; रीतिसिद्ध काव्य : प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि; रीतिमुक्त काव्य : प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख कवि; रीतिकाल की अन्य काव्य प्रवृत्तियाँ; रीतिकालीन गद्य-साहित्य।

आधार संदर्भ ग्रन्थ

- हिन्दी साहित्य का इतिहास – (सं०) डॉ० नगेन्द्र

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- साहित्य और इतिहास दृष्टि – मैनेजर पाण्डेय
- हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ० बच्चन सिंह
- हिन्दी साहित्य के इतिहास की समस्याएँ – अवधेश प्रधान
- हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
- मध्यकालीन हिन्दी साहित्य का इतिहास – सूर्यनारायण रणसुभे

सेमेस्टर-I CC-2

M24-HIN-102 मध्ययुगीन हिन्दी काव्य

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

मध्ययुगीन हिन्दी काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों, कवियों तथा काव्य परंपराओं की गहन और समग्र समझ विकसित करना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

102.1 विद्यार्थी मध्ययुगीन हिन्दी काव्य के विविध धार्मिक, दार्शनिक और कलात्मक पक्षों को समझ सकेंगे।

102.2 प्रमुख कवियों की रचनाओं की विषयवस्तु, भाषा-शैली एवं काव्यगत विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।

102.3 भक्तिकाव्य, रीतिकाव्य एवं प्रेमाख्यान काव्य की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का बोध होगा।

102.4 कविता की व्याख्या, आलोचनात्मक मूल्यांकन तथा तुलना की क्षमता विकसित होगी।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **व्याख्या** – पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं में से चार काव्यांश दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं दो काव्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक काव्यांश के लिए 06 अंक निर्धारित हैं। यह खंड कुल 12 अंक का होगा।
- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम में से रचनाकारों व उनकी रचनाओं की मूल संवेदना, विषयवस्तु, सामाजिक सरोकार, कलागत वैशिष्ट्य, प्रासंगिकता आदि से संबंधित आंतरिक विकल्प सहित तीन प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 36 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – निर्धारित रचनाकारों व उनकी रचनाओं की मूल संवेदना और विषयवस्तु संबंधी सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 4 प्रश्नों का उत्तर लगभग 150-200 शब्दों में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। यह खंड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु ऐसे विषय निर्धारित किए जाएं, जो पाठ आधारित विश्लेषण के साथ-साथ कवियों की काव्य दृष्टि, समकालीनता और सौंदर्य पक्षों पर चिंतन को प्रेरित करें।

पाठ्यक्रम

(क) व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्यांश (काव्यांश)

कबीरदास	: [पद संख्या – 160 से 180 तक]	कबीर – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन
सूरदास	: [पद संख्या – 21 से 40 तक]	भ्रमरगीत सार – सं॰ रामचन्द्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन
मीरा	: [मीरा पदावली – प्रारम्भ से 13 पद]	मीरा पदावली - सं॰ विश्वनाथ त्रिपाठी
तुलसीदास	: [उत्तरकाण्ड – प्रारम्भ से 20 पद]	रामचरितमानस (उत्तरकाण्ड) – गीताप्रेस, गोरखपुर
बिहारी	: [दोहा – 1 से 25 तक]	बिहारी रत्नाकर – सं॰ जगन्नाथदास रत्नाकर, लोकभारती प्रकाशन
घनानन्द	: [घनानन्द कवित्त – 1 से 10 तक]	घनानन्द कवित्त – सं॰ विश्वनाथ मिश्र

(ख) आलोचनात्मक और लघु-उत्तरीय अध्ययन हेतु कवि-सूची

कबीरदास, सूरदास, जायसी, मीराबाईं, तुलसीदास, बिहारी, घनानन्द

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- सूरदास – ब्रजेश्वर शर्मा
- मीराबाई – परशुराम चतुर्वेदी
- कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी
- जायसी – विजयदेव नारायण साही
- बिहारी की वाग्विभूति – विश्वनाथ मिश्र
- कबीर की विचारधारा – गोविन्द त्रिगुणायत
- गोस्वामी तुलसीदास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- मध्यकालीन हिन्दी काव्य भाषा – रामस्वरूप चतुर्वेदी

सेमेस्टर-I CC-3

M24-HIN-103 लोक साहित्य

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

विद्यार्थियों को लोकसंस्कृति, लोकसाहित्य एवं हरियाणवी लोक परंपरा की व्यापक समझ प्रदान करना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

103.1 लोक और लोकसंस्कृति की परिभाषा, स्वरूप और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रासंगिकता को समझ सकेंगे।

103.2 लोक साहित्य एवं कलाओं के विविध रूपों का अध्ययन और विश्लेषण कर सकेंगे।

103.3 हरियाणवी संस्कृति, भाषा, साहित्य और लोककथाओं की विशेषताओं का विश्लेषण और विवेचन कर सकेंगे।

103.4 लोक धरोहर के संरक्षण और शोध, संग्रहण और संरक्षण की दिशा में आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करेंगे

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर विश्लेषणात्मक, तार्किक संरचना और संदर्भ-प्रदत्त आलोचनात्मक रूप में देना होगा जिसमें परिपक्वता परिलक्षित हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 48 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक उत्तर लगभग 150 से 200 शब्दों में, संक्षिप्त, तथ्यपरक एवं विश्लेषणात्मक हो ताकि विद्यार्थी की विषयवस्तु पर पकड़ का आकलन किया जा सके। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे, जिनके उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में अपेक्षित होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु ऐसे विषय निर्धारित किए जाएं, जो सांस्कृतिक विश्लेषण, सामाजिक चेतना और क्षेत्रीय धरोहर के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करें।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 लोक : अर्थ, परिभाषा एवं परम्परा; लोकसंस्कृति : परिभाषा, स्वरूप और विशेषताएँ; लोक कलाएँ : प्रकार, स्वरूप और सांस्कृतिक महत्व; भूमंडलीकरण में लोक तत्वों की पुनर्पर्याप्ति और चुनौतियाँ; लोक भाषा का स्वरूप और विशेषताएँ; लोकभाषा और परिनिष्ठित भाषा।

इकाई-2 लोक साहित्य : अर्थ, परिभाषा, स्वरूप और परम्परा; लोक साहित्य के प्रमुख रूप; लोक साहित्य और अभिजात (शिष्ट) साहित्य का अंत:संबंध, लोकसाहित्य के अध्ययन की दिशाएँ, शोध एवं अनुसंधान; लोक साहित्य का संग्रहण एवं संरक्षण।

इकाई-3 हरियाणा : ऐतिहासिकता, नामकरण, क्षेत्र-विस्तार; हरियाणवी संस्कृति : स्वरूप, तत्व और विशेषताएँ; हरियाणवी भाषा : एक परिचय; हरियाणवी लोक साहित्य : स्वरूप और परम्परा; हरियाणवी लोक कला : प्रकार, विशेषताएँ और महत्व।

इकाई-4 **हरियाणवी लोक वार्ता** : स्वरूप-विवेचन, शैली एवं सांस्कृतिक महत्व; **हरियाणवी लोक गाथा** : परिचय, परंपरा, प्रकार, प्रवृत्तियां, शैली एवं सांस्कृतिक महत्व; **हरियाणवी लोक कथा** : रुपात्मक परिचय, परंपरा, परिवेश, लोक संस्कृति में स्थान, लोक कथाओं की विशेषताएँ और शिल्प सौंदर्य।

अनुशंसित सन्दर्भ ग्रन्थ

- हरियाणी लोक साहित्य : सांस्कृतिक संदर्भ – डॉ॰ भीम सिंह मलिक
- लोक साहित्य विज्ञान – डॉ॰ सत्येन्द्र
- लोक साहित्य : विविध आयाम – डॉ॰ राम मेहर सिंह
- लोक संस्कृति के क्षितिजि – पूर्णचन्द शर्मा
- साहित्य की सांस्कृतिक परम्परा – मनोहर शर्मा
- लोक साहित्य की भूमिका – कृष्णदेव उपाध्याय
- लोक साहित्य के प्रतिमान – डॉ॰ कुंदन लाल उत्प्रेती

सेमेस्टर-I CC-4

M24-HIN-104 हिन्दी नाटक और निबंध

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हिंदी निबंध और नाट्य साहित्य के माध्यम से साहित्यिक चिंतन, विश्लेषण क्षमता और दृश्य संवेदना का विकास करना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

104.1 प्रमुख हिंदी नाटकों की कथावस्तु, पात्रों और दृश्य-विधान, शिल्प और भाव पक्ष को पहचान सकेंगे।

104.2 विविध निबंधकारों की शैली, दृष्टिकोण और भाषा की विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।

104.3 साहित्यिक पाठों के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक विमर्श को समझने में सक्षम होंगे।

104.4 नाट्य लेखन व उसके प्रस्तुतीकरण के विविध पहलुओं के बारे में मूल्यांकन की समझ विकसित करेंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **व्याख्या** – पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं में से चार पाठांश दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं दो पाठांश की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक पाठांश के लिए 06 अंक निर्धारित हैं। यह खंड कुल 12 अंक का होगा।
- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम में से रचनाकारों व उनकी रचनाओं की मूल संवेदना, विषयवस्तु, सामाजिक सरोकार, कलागत वैशिष्ट्य, प्रासंगिकता आदि से संबंधित आंतरिक विकल्प सहित तीन प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 36 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – निर्धारित रचनाकारों व उनकी रचनाओं की मूल संवेदना और विषयवस्तु संबंधी सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 4 प्रश्नों का उत्तर लगभग 150-200 शब्दों में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। यह खंड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु ऐसे विषय निर्धारित किए जाएं, जो साहित्यिक पाठों की बहुविध व्याख्या, दृश्यात्मक कल्पनाशक्ति और समकालीन दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करें।

पाठ्यक्रम

(क) आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए नाटक

ध्रुवस्वामिनी — जयशंकर प्रसाद
आषाढ़ का एक दिन — मोहन राकेश

(ख) व्याख्या एवं लघुत्तरी प्रश्नों के लिए

कविता क्या है (रामचन्द्र शुक्ल), नाखून क्यों बढ़ते हैं (हजारी प्रसाद द्विवेदी); मेरे राम का मुकुट भीग रहा है (विद्यानिवास मिश्र); मजदूरी और प्रेम (अध्यापक पूर्ण सिंह); उत्तराफाल्गुनी के आस-पास (कुबेरनाथ राय), उठ जाग मुसाफिर (विवेकी राय), संस्कृति और सौन्दर्य (नामवर सिंह)।

अनुशंसित सन्दर्भ ग्रन्थ

- हिन्दी नाटक – डॉ० बच्चन सिंह
- प्रसाद के नाटक – सिद्धनाथ कुमार
- साठोत्तरी हिन्दी नाटक – नीलम राठी
- प्रसाद का नाट्य कर्म – सत्येन्द्र तनेजा
- आज के रंग नाटक – सं० सुरेश अवस्थी
- मोहन राकेश के नाटक – डॉ० मृदुला सिंह
- मोहन राकेश और उनके नाटक – गिरिश रस्तोगी
- हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास – दशरथ ओझा

सेमेस्टर-I DEC-1

M24-HIN-105 कबीरदास

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

कबीरदास के साहित्य के माध्यम से संत काव्य की वैचारिक, भाषिक और सांस्कृतिक विशेषताओं की समझ विकसित करना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

105.1 विद्यार्थी संत काव्य की परंपरा, विचारधारा एवं सामाजिक सरोकारों का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।

105.2 कबीर की कविता के माध्यम से रहस्यवाद, समाज-दर्शन एवं भक्ति आंदोलन की गहराई को समझ सकेंगे।

105.3 कबीर की भाषा, शैली, प्रतीक योजना और उलटबासियों के कलात्मक प्रयोग का अध्ययन कर सकेंगे।

105.4 कबीर की प्रासंगिकता तथा दृश्य-श्रव्य माध्यमों में उसकी अभिव्यक्ति का मूल्यांकन कर सकेंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **व्याख्या** – पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं में से चार पाठांश दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं दो पाठांश की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक पाठांश के लिए 06 अंक निर्धारित हैं। यह खंड कुल 12 अंक का होगा।
- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम में से आंतरिक विकल्प सहित तीन प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 36 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – निर्धारित रचनाकारों व उनकी रचनाओं की मूल संवेदना और विषयवस्तु संबंधी सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 4 प्रश्नों का उत्तर लगभग 150-200 शब्दों में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। यह खंड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु ऐसे विषय निर्धारित किए जाएं, जो संत साहित्य की वैचारिक परंपरा, आलोचनात्मक दृष्टिकोण और सामाजिक सरोकारों की समझ को विकसित करें।

पाठ्यक्रम

(क) व्याख्या के लिए

साखी : गुरुदेव कौ अंग, सुमिरन कौ अंग, बिरह कौ अंग, ग्यान बिरह कौ अंग, चितावणी कौ अंग
[प्रत्येक अंग की साखियाँ क्रमांक 1 से 10 तक]

पद : क्रमांक 1 से 5 तक

रमैणी : क्रमांक 1 से 5 तक

(ख) आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए

संतकाव्य की परंपरा, वैचारिक आधार और सामाजिक प्रभाव; संतकाव्य की प्रासंगिकता; कबीर का जीवन, साहित्य और विचारधारा; कबीर की भक्ति भावना, रहस्यवाद और समाज-दर्शन; कबीर की भाषा, काव्य-कला, प्रतीक और उलटबासियाँ; कबीर का सामाजिक विद्रोह; कबीर के राम; परवर्ती साहित्य पर कबीर का प्रभाव; हिन्दी आलोचना में कबीर; कबीर के आलोचक और लोक छवियाँ; दृश्य-श्रव्य माध्यमों में कबीर की उपस्थिति; वर्तमान समय में कबीर की प्रासंगिकता।

(ग) लघुत्तरी प्रश्नों के लिए

नामदेव, रैदास, कबीर, गुरु नानक, दादू दयाल, मलूकदास, गरीबदास – इनके साहित्यिक योगदान, वैचारिक प्रवृत्तियाँ

अनुशंसित सन्दर्भ ग्रन्थ

- कबीर एक नई दृष्टि – रघुवंश
- कबीर – हजारी प्रसाद द्विवेदी
- कबीर काव्य-मीमांसा – रामचन्द्र तिवारी
- हिन्दी निर्गुण काव्यधारा एवं कबीर – जयदेव सिंह
- कबीर का रहस्यवाद – डॉ॰ रामकुमार वर्मा

सेमेस्टर-I DEC-1

M24-HIN-106 तुलसीदास

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

तुलसीदास साहित्य के माध्यम से रामकाव्य की सांस्कृतिक, सामाजिक और दार्शनिक परंपरा की समग्र समझ विकसित करना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

106.1 विद्यार्थी तुलसीदास के साहित्य के वैचारिक, धार्मिक और लोकमंगलकारी पक्षों का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।

106.2 तुलसीकाव्य में रामकथा की विविध परंपराओं और उनके सामाजिक प्रभाव को समझ सकेंगे।

106.3 तुलसीदास की भाषा, शैली, काव्य-कला एवं समन्वय-दृष्टि का मूल्यांकन कर सकेंगे।

106.4 आधुनिक संदर्भ में तुलसीदास की प्रासंगिकता और उनके साहित्य के परवर्ती प्रभाव को पहचान सकेंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **व्याख्या** – पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं में से चार पाठांश दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं दो पाठांश की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक पाठांश के लिए 06 अंक निर्धारित हैं। यह खंड कुल 12 अंक का होगा।
- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम में से आंतरिक विकल्प सहित तीन प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 36 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – निर्धारित रचनाकारों व उनकी रचनाओं की मूल संवेदना और विषयवस्तु संबंधी सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 4 प्रश्नों का उत्तर लगभग 150-200 शब्दों में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। यह खंड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे, जिनके उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में अपेक्षित होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु ऐसे विषय निर्धारित किए जाएं, जो विद्यार्थियों में तुलसी साहित्य की काव्य-विश्लेषण क्षमता, तुलनात्मक दृष्टिकोण और सांस्कृतिक चेतना को विकसित करें।

पाठ्यक्रम

(क) व्याख्या के लिए

रामचरितमानस : उत्तरकाण्ड

गीतावली : पद क्रमांक 1 से 20 तक

(ख) आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए

रामकाव्य का वैचारिक आधार और परंपरा; रामकथा के विविध रूप; रामकाव्य का सामाजिक प्रभाव; रामकाव्य की प्रासंगिकता; तुलसी का जीवन और साहित्य; तुलसीदास और उनका सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश; तुलसी के काव्य में युग-चित्रण; तुलसीदास के राम; तुलसीदास और लोकमंगल की भावना; तुलसीदास की समन्वय साधना; तुलसीदास साहित्य में आदर्श राज्य की कल्पना; लोकजीवन और तुलसीदास; तुलसी का काव्य-वैभव; तुलसीदास की भाषा; तुलसीदास का परवर्ती साहित्य पर प्रभाव; वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गोस्वामी तुलसीदास।

(ग) लघुत्तरी प्रश्नों के लिए

रामानन्द, तुलसीदास, केशवदास, नाभादास, सेनापति, अग्रदास, वेणीमाधव

अनुशंसित सन्दर्भ ग्रन्थ

- तुलसी काव्य मीमांसा – उदयभानु सिंह
- तुलसीदास – सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
- लोकवादी तुलसीदास – विश्वनाथ त्रिपाठी
- वाणी के विनायक : तुलसी – डॉ॰ मंजुलता
- गोस्वामी तुलसीदास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- संत तुलसी और उनका साहित्य – स्वामी आनन्द कुलश्रेष्ठ

सेमेस्टर-I परिसंवाद (सेमिनार)

M24-HIN-109 परिसंवाद

क्रेडिट : 2 अंक : 50

🏛️ पाठ्यक्रम का उद्देश्य

विद्यार्थियों की भाषिक अभिव्यक्ति, वैचारिक स्पष्टता, विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण, प्रस्तुतिकरण क्षमता तथा संवाद-कला में आत्मविश्वासी दक्षता विकसित करना।

🧭 पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

109.1 विद्यार्थियों में मौलिक चिंतन, तर्कशील विश्लेषण और वैचारिक स्वतंत्रता का विकास होगा।

109.2 बहु-आयामी पाठ विश्लेषण की क्षमता उत्पन्न होगी।

109.3 आलोचनात्मक दृष्टिकोण और वैचारिक परिपक्वता का संवर्धन होगा।

109.4 प्रस्तुति-कौशल, आत्मविश्वास और व्यक्तित्व-विकास में वृद्धि होगी।

📅 परिसंवाद हेतु आवश्यक निर्देश

- ☞ परिसंवाद के लिए विषय का चयन विद्यार्थी स्वयं अपनी रुचि से अथवा प्राध्यापक द्वारा प्रदत्त सूची से करें।
- ☞ परिसंवाद का विषय हिन्दी भाषा, साहित्य, साहित्यकार, विधा या किसी रचना से संबंधित हो सकता है।
- ☞ परिसंवाद हेतु लेखन एवं मौखिक प्रस्तुति दोनों अनिवार्य हैं।
- ☞ लेखन कार्य केवल विद्यार्थी द्वारा स्वयं हस्तलिखित हो; टंकित/अन्य द्वारा लिखा गया कार्य स्वीकार्य नहीं है।
- ☞ लेखन के लिए केवल नीली स्याही एवं कोरे सफेद A4 आकार के पृष्ठों का प्रयोग करें।
- ☞ लेखन कार्य एक तरफा हो तथा कम से कम 10 पृष्ठों का संयोजन अनिवार्य है।
- ☞ अधोरेखांकन, रंगीन स्याही, पेंसिल, मार्कर या हाईलाइटर का प्रयोग वर्जित है।
- ☞ लेखन में केवल हिंदी भाषा एवं मानक विराम-चिह्नों का प्रयोग करें। मानक हिंदी विराम-चिह्नों के अतिरिक्त अन्य प्रतीकों, रंगों या डिजाइनयुक्त संकेतों का प्रयोग वर्जित है।
- ☞ परिसंवाद की प्रस्तुति विभागीय निर्देशों व समय-सारणी के अनुरूप हो।
- ☞ शोध-पत्र को सुव्यवस्थित रूप में तैयार कर स्वं हस्ताक्षरित प्रति संबंधित प्राध्यापक को नियत तिथि तक जमा करें।

📊 मूल्यांकन पद्धति (Evaluation Criteria)

परिसंवाद का मूल्यांकन विभागीय समिति द्वारा निम्नलिखित आधारों पर किया जाएगा:

मूल्यांकन घटक	**अंक**
लेखन की मौलिकता, विषय की प्रासंगिकता एवं संरचना	15 अंक
प्रस्तुति शैली एवं स्पष्टता	10 अंक
विषय की समझ एवं तात्विक विश्लेषण	10 अंक
भाषा, शुद्धता, शैली एवं समयबद्धता	10 अंक
प्रतिभागिता, प्रश्नोत्तर एवं उत्तरदायित्व	5 अंक
कुल	**50 अंक**

📚 पाठ्यक्रम सामग्री (Suggested Topics for Lecture/Discourse)

- 🪷 1. भाषा और साहित्य की अवधारणाएँ
- 📖 2. साहित्यिक कालखण्ड एवं प्रवृत्तियाँ
- 🖼️ 3. साहित्यकारों पर केन्द्रित विषय
- 🎭 4. रचना/विधा-विशेष केन्द्रित विषय
- 🌿 5. विचारधारात्मक और सांस्कृतिक विमर्श
- 🎥 6. दृश्य-श्रव्य माध्यमों में साहित्य
- 🧠 7. समकालीन विषय एवं साहित्यिक बहसें

सेमेस्टर-II CC-5

M24-HIN-201 हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

आधुनिक हिन्दी साहित्य की ऐतिहासिकता, विचार-प्रवृत्तियाँ और साहित्यकारों की समीक्षात्मक समझ विकसित करना है।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

201.1 विद्यार्थी आधुनिक हिन्दी साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और नवजागरण की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।

201.2 हिन्दी साहित्य की विधाओं के विकास की प्रवृत्तियों और प्रमुख रचनाकारों का गहन अध्ययन कर सकेंगे।

201.3 विद्यार्थी आधुनिक हिन्दी साहित्य में विचारधारात्मक आंदोलनों की विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।

201.4 कथेतर गद्य-विधाओं का साहित्यिक महत्व को समझते हुए समकालीन गद्य लेखन का मूल्यांकन कर सकेंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर विश्लेषणात्मक, तार्किक संरचना और संदर्भ-प्रदत्त आलोचनात्मक रूप में देना होगा, जिसमें परिपक्वता परिलक्षित हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 48 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक उत्तर लगभग 150 से 200 शब्दों में, संक्षिप्त, तथ्यपरक एवं विश्लेषणात्मक हो ताकि विद्यार्थी की विषयवस्तु पर पकड़ का आकलन किया जा सके। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे, जिनके उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में अपेक्षित होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु ऐसे विषय निर्धारित किए जाएं, जो आधुनिक हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक विकास, प्रमुख प्रवृत्तियों तथा विधागत परिवर्तन की गहन समझ को प्रोत्साहित करें।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 आधुनिक काल की पृष्ठभूमि : ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश; हिन्दी नवजागरण की भूमिका; भारतेंदु युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ और साहित्यकार; हिन्दी गद्य साहित्य की स्थापना; द्विवेदी युग की प्रवृत्तियाँ और साहित्यकार।

इकाई-2 काव्य आंदोलनों का विकास : छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता, नवगीत और समकालीन कविता – सभी की प्रवृत्तियाँ, सौंदर्य-दृष्टियाँ एवं प्रतिनिधि कवि।

इकाई-3 गद्य विधाओं का विकास : हिन्दी नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध और आलोचना – विधागत विकासक्रम, रचना-प्रवृत्तियाँ एवं प्रमुख साहित्यकार।

इकाई-4 हिंदी कथेतर गद्य-विधाएँ : आत्मकथा, जीवनी, यात्रा-वृत्तांत, डायरी, संस्मरण, रेखाचित्र और रिपोर्ताज – इन विधाओं की रचनात्मक प्रकृति, ऐतिहासिक विकास एवं साहित्यिक प्रासंगिकता।

आधार संदर्भ ग्रन्थ

- हिन्दी साहित्य का इतिहास – (सं०) डॉ० नगेन्द्र

अनुशंसित सन्दर्भ ग्रन्थ

- हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – डॉ० बच्चन सिंह
- हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- हिन्दी साहित्य का विवेचनपरक इतिहास – मोहन अवस्थी
- हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – रामकुमार वर्मा
- आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास – सूर्यनारायण रणसुभे
- हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी

सेमेस्टर-II CC-6

M24-HIN-202 आधुनिक हिन्दी कविता

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

आधुनिक हिन्दी कवियों की प्रतिनिधि रचनाओं के माध्यम से कविता की विविध प्रवृत्तियों, काव्य-दृष्टियों एवं शिल्पगत विशेषताओं की समझ विकसित करना है।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

202.1 विद्यार्थी आधुनिक हिन्दी कविता की वैचारिक और कलात्मक प्रवृत्तियों का विश्लेषण कर सकेंगे।

202.2 प्रमुख कवियों की भाषा, शिल्प और दृष्टिकोण की विशेषताओं को पहचानने की क्षमता विकसित होगी।

202.3 सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संदर्भों में कविता की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना सीखेंगे।

202.4 पाठ विश्लेषण, व्याख्या और आलोचनात्मक चिंतन में दक्षता प्राप्त होगी।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **व्याख्या** – पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं में से चार पद्यांश दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं दो का चयन कर संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या प्रस्तुत करनी होगी। प्रत्येक व्याख्या के लिए 06 अंक निर्धारित हैं। यह खंड कुल 12 अंक का होगा।
- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित कवियों एवं काव्य-पाठों के आधार पर सामाजिक सरोकार, कलागत वैशिष्ट्य, विचारधारा तथा प्रासंगिकता से संबंधित तीन दीर्घ प्रश्न (आंतरिक विकल्प सहित) दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को प्रत्येक का उत्तर विश्लेषणात्मक, तर्कसंगत प्रस्तुत करना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 36 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से रचनाकारों व उनकी रचनाओं की मूल संवेदना और विषयवस्तु संबंधी सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 4 प्रश्नों का उत्तर लगभग 200 शब्दों में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। यह खंड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – पाठ्यक्रम की समग्रता से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे, जिनके उत्तर एक शब्द या एक वाक्य में अपेक्षित होंगे। प्रत्येक प्रश्न 1 अंक का होगा। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु ऐसे व्यावहारिक एवं शोधोन्मुख विषय निर्धारित किए जाएं, जो विद्यार्थियों की विश्लेषण क्षमता, मौलिक चिंतन और साहित्यिक समझ के विकास में सहायक हों।

पाठ्यक्रम

(क) व्याख्या के लिए

मैथिलीशरण गुप्त	: साकेत (नवम् सर्ग) [आरम्भ से लेकर 'तू है फूलों में पली, यह काँटों की सेज!' तक]
जयशंकर प्रसाद	: कामायनी (श्रद्धा सर्ग)
सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	: राम की शक्ति पूजा
रामधारी सिंह 'दिनकर'	: उर्वशी (तृतीय अंक) [भाग-1 'नींद में, मानो, किसी मरुदेश में चलना पडा हो' तक]
नागार्जुन	: कालिदास, शासन की बंदूक
अज्ञेय	: असाध्यवीणा
धूमिल	: अकाल दर्शन, रोटी और संसद

(ख) आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए

मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', रामधारी सिंह 'दिनकर', नागार्जुन, अज्ञेय, धूमिल

अनुशंसित सन्दर्भ ग्रन्थ

- कविता के नए प्रतिमान – नामवर सिंह
- नई कविता के संदर्भ – सारस्वत मोहन 'मनीषी'
- हिन्दी काव्य का इतिहास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
- निराला की साहित्य साधना – रामविलास शर्मा
- समकालीन हिन्दी कविता – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

सेमेस्टर-II CC-7

M24-HIN-203 हरियाणवी लोक साहित्य

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हरियाणवी लोक साहित्य की विधाओं के माध्यम से क्षेत्रीय सांस्कृतिक चेतना, परंपरा और साहित्यिक वैभव का बोध कराना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

203.1 हरियाणवी लोकगीत, लोकनाट्य और सुभाषित परंपरा की विशेषताओं और सांस्कृतिक महत्त्व को समझ सकेंगे।

203.2 लोक साहित्य की अभिव्यक्ति, प्रतीकात्मकता एवं सामाजिक सन्दर्भों का विश्लेषण करने में दक्षता विकसित करेंगे।

203.3 विद्यार्थी हरियाणवी सांग की कथ्यगत एवं शिल्पगत विशेषताओं का अनुशीलन कर सकेंगे।

203.4 विद्यार्थियों में लोकविधाओं के प्रति संवेदनशीलता, संरक्षण-भावना तथा आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित होगा।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **व्याख्या** – पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं में से चार पाठांश दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं दो पाठांश की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक पाठांश के लिए 06 अंक निर्धारित हैं। यह खंड कुल 12 अंक का होगा।
- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 36 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु ऐसे व्यावहारिक एवं शोधोन्मुख विषय निर्धारित किए जाएं, जो विद्यार्थियों की विश्लेषण क्षमता, मौलिक चिंतन और साहित्यिक समझ के विकास में सहायक हों।

पाठ्यक्रम

(क) व्याख्या के लिए

आधार पाठ्य-ग्रन्थ : **हरियाणवी लोकरंग** [चयनित हरियाणवी लोकगीत एवं रागनियाँ]

(ख) आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए

इकाई-1 हरियाणवी लोकगीत : परंपरा, स्वरूप, प्रकार, विशेषताएँ और सांस्कृतिक महत्व; हरियाणवी लोकगीतों में संगीत विधान (लोक वाद्य-यंत्र); लोकगीतों में व्यंजना का अनूठापन; हरियाणवी लोकगीतों में नए प्रयोग।

इकाई-2 हरियाणवी लोकनाट्य : अवधारणा, स्वरूप और महत्व; हरियाणवी सांग : उद्भव, विकास, स्वरूप और महत्व; सांग के विभिन्न अंग; हरियाणवी सांग एवं अन्य लोक विधाएं; हरियाणवी सांग की कथ्य एवं शिल्पगत विशेषताएँ।

इकाई-3 हरियाणवी लोक सुभाषित : परम्परा, स्वरूप, प्रकार, विशेषताएँ और सांस्कृतिक महत्व; हरियाणवी लोक विनोद : परम्परा, स्वरूप, प्रकार, विशेषताएँ और सांस्कृतिक महत्व; हरियाणवी समाज में लोक विनोद और हास्य-व्यंग्य।

अनुशंसित सन्दर्भ ग्रन्थ

- लोकधारा के नए आयाम – डॉ॰ भीम सिंह मलिक
- हरियाणवी लोक कथाएँ – शंकरलाल यादव
- हरियाणा की कला एवं संस्कृति – गोपाल भार्गव
- लोक साहित्य और संस्कृति – डॉ॰ दिनेश्वर प्रसाद
- हरियाणी सांगीत का उद्भव और विकास – डॉ॰ राम मेहर सिंह
- हरियाना प्रदेश का लोक साहित्य – शंकरलाल यादव

सेमेस्टर-II CC-8

M24-HIN-204 हिन्दी कथा साहित्य

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हिन्दी कथा साहित्य के माध्यम से सामाजिक यथार्थ, मनोवैज्ञानिक संवेदना और रचनात्मक विविधता का सम्यक् अध्ययन कराना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

204.1 विद्यार्थी हिन्दी उपन्यास और कहानी की विकास यात्रा एवं विचारभूमि को समझ सकेंगे।

204.2 कथानकों के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक सरोकारों का विश्लेषण कर सकेंगे।

204.3 कथा-लेखकों की शैली, दृष्टिकोण और विषयवस्तु की विशेषताओं को आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकेंगे।

204.4 विद्यार्थियों में संवेदनशील पाठकीय दृष्टि, पाठ-विश्लेषण क्षमता और रचनात्मक अभिव्यक्ति का विकास होगा।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **व्याख्या** – पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं में से चार पाठांश दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं दो पाठांश की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक पाठांश के लिए 06 अंक निर्धारित हैं। यह खंड कुल 12 अंक का होगा।
- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम में से रचनाकारों व उनकी रचनाओं की मूल संवेदना, विषयवस्तु, सामाजिक सरोकार, कलागत वैशिष्ट्य, प्रासंगिकता आदि से संबंधित आंतरिक विकल्प सहित तीन प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 36 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – निर्धारित रचनाकारों व उनकी रचनाओं की मूल संवेदना और विषयवस्तु संबंधी सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 4 प्रश्नों का उत्तर लगभग 200 शब्दों में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। यह खंड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु ऐसे व्यावहारिक एवं शोधोन्मुख विषय निर्धारित किए जाएं, जो विद्यार्थियों की विश्लेषण क्षमता, मौलिक चिंतन और साहित्यिक समझ के विकास में सहायक हों।

पाठ्यक्रम

(क) आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए

गोदान : मुंशी प्रेमचन्द

मैला आँचल : फणीश्वरनाथ रेणु

(ख) व्याख्या एवं लघुत्तरी प्रश्नों के लिए

आकाशदीप (जयशंकर प्रसाद); शतरंज के खिलाड़ी (प्रेमचन्द); अपना-अपना भाग्य (जैनेन्द्र कुमार); परिन्दें (निर्मल वर्मा); मलबे का मालिक (मोहन राकेश); चीफ की दावत (भीष्म साहनी); राजा निरबंसिया (कमलेश्वर); पच्चीस चौका डेढ़ सौ (ओमप्रकाश वाल्मीकि)।

अनुशंसित सन्दर्भ ग्रन्थ

- नई कहानी की भूमिका – कमलेश्वर
- एक दुनिया समानान्तर – राजेन्द्र यादव
- प्रेमचन्द का कथा संसार – नरेन्द्र मोहन
- हिन्दी उपन्यास का इतिहास – गोपाल राय
- प्रेमचन्द और उनका युग – रामविलास शर्मा
- मैला आँचल की रचना-प्रक्रिया – देवेश ठाकुर
- नई कहानी : संवेदना और स्वरूप – राजेन्द्र यादव
- हिन्दी कहानी : एक अंतरंग पहचान – रामदरश मिश्र
- आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य का विकास और विश्लेषण – डॉ॰ विजयमोहन सिंह

सेमेस्टर-II DEC-2

M24-HIN-205 प्रेमचन्द

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

प्रेमचन्द के बहुआयामी रचनात्मक अवदान के माध्यम से साहित्य, समाज और संस्कृति के अंतर्संबंधों की समग्र समझ विकसित करना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

205.1 विद्यार्थी प्रेमचन्द के कथा साहित्य, निबंध और नाट्य-रचनाओं के सामाजिक, राजनीतिक एवं नैतिक मूल्यों को समझ सकेंगे।

205.2 प्रेमचन्द के साहित्य में यथार्थवाद, आदर्शवाद और मानवीय सरोकारों की अभिव्यक्ति का आलोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।

205.3 विद्यार्थियों को प्रेमचन्द की भाषा-शैली, संवाद-योजना एवं पात्र-निर्माण की विशिष्टताओं का ज्ञान होगा।

205.4 प्रेमचन्द की प्रासंगिकता को पहचानते हुए वे साहित्य और समाज के परस्पर संबंधों पर चिंतन कर सकेंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **व्याख्या** – पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं में से चार पाठांश दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं दो पाठांश की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक पाठांश के लिए 06 अंक निर्धारित हैं। यह खंड कुल 12 अंक का होगा।
- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित रचना एवं विषयों में से आंतरिक विकल्प सहित तीन प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 36 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – निर्धारित रचनाओं की मूल संवेदना और विषयवस्तु से संबंधी सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 4 प्रश्नों का उत्तर लगभग 200 शब्दों में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। यह खंड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु ऐसे व्यावहारिक एवं शोधोन्मुख विषय निर्धारित किए जाएं, जो विद्यार्थियों की विश्लेषण क्षमता, मौलिक चिंतन और साहित्यिक समझ के विकास में सहायक हों।

पाठ्यक्रम

(क) व्याख्या एवं लघुत्तरी प्रश्नों के लिए

कहानियाँ : बड़े भाई साहब, पूस की रात, सवा सेर गेहूँ, पंच-परमेश्वर, बूढ़ी काकी, नमक का दरोगा।

निबंध : मानसिक पराधीनता; जाग्रति; साहित्य की प्रगति; जीवन और साहित्य में घृणा का स्थान; साहित्य का उद्देश्य; जीवन में साहित्य का स्थान; साहित्य और मनोविज्ञान।

(ख) आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए

प्रेमचन्द घर में (जीवनी) – शिवरानी देवी;

प्रेमचन्द का जीवन और साहित्य; प्रेमचन्द का जीवन-दर्शन एवं साहित्यिक चिन्तन; आदर्शवाद और यथार्थवाद का द्वंद्व; राष्ट्रीय जागरण और प्रेमचन्द की भूमिका; प्रेमचन्द का पात्र-सृजन और संवाद योजना; प्रेमचन्द का कथाशिल्प और भाषा-शैली; नाटककार, पत्रकार, निबंधकार और कथाकार के रूप में प्रेमचन्द; प्रेमचन्द और नारी विमर्श; प्रेमचन्द और किसान वर्ग; वर्तमान संदर्भों में प्रेमचन्द की प्रासंगिकता; हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द का स्थान और योगदान।

अनुशंसित सन्दर्भ ग्रन्थ

- प्रेमचन्द घर में – शिवरानी देवी (पाठ्य-पुस्तक)
- कलम का सिपाही – अमृतराय
- कथाकार प्रेमचन्द – मन्मथनाथ गुप्त
- प्रेमचन्द एक कला व्यक्तित्व – जैनेन्द्र
- प्रेमचन्द और उनका युग – रामविलास शर्मा
- प्रेमचन्द के साहित्य सिद्धान्त – नरेन्द्र कोहनी
- प्रेमचन्द : साहित्यिक विवेचन – नन्ददुलारे वाजपेयी
- प्रेमचन्द के उपन्यासों का शिल्प विधान – कमल किशोर गोयनका

सेमेस्टर-II DEC-2

M24-HIN-206 हरिशंकर परसाई

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि, सामाजिक सरोकारों की समझ तथा व्यंग्य की रचनात्मक विशेषताओं का विकास करना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

206.1 विद्यार्थी हरिशंकर परसाई के साहित्य में निहित यथार्थबोध, सामाजिक आलोचना और व्यंग्य की धार को समझ सकेंगे।

206.2 परसाई की भाषा, शैली, कथ्य और संरचना की विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।

206.3 हिन्दी व्यंग्य साहित्य के विकास में परसाई के योगदान का सम्यक् मूल्यांकन कर सकेंगे।

206.4 समकालीन सामाजिक-राजनीतिक संदर्भों में परसाई की प्रासंगिकता और साहित्यिक विरासत को पहचान सकेंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **व्याख्या** – पाठ्यक्रम में निर्धारित रचनाओं में से चार पाठांश दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं दो पाठांश की संदर्भ सहित व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक पाठांश के लिए 06 अंक निर्धारित हैं। यह खंड कुल 12 अंक का होगा।
- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम में से आंतरिक विकल्प सहित तीन प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 36 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – निर्धारित रचनाओं की मूल संवेदना और विषयवस्तु से संबंधी सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं 4 प्रश्नों का उत्तर लगभग 200 शब्दों में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। यह खंड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु ऐसे व्यावहारिक एवं शोधोन्मुख विषय निर्धारित किए जाएं, जो विद्यार्थियों की विश्लेषण क्षमता, मौलिक चिंतन और साहित्यिक समझ के विकास में सहायक हों।

पाठ्यक्रम

(क) व्याख्या एवं लघुत्तरी प्रश्नों के लिए

निर्धारित रचनाएँ : चूहा और मैं, दो नाक वाले लोग, एक के भीतर दो आदमी, सड़े आलू का विद्रोह, डिवाइन ल्यूनेटिक मिशन, अहले वतन में इतनी शराफत कहाँ है जोश, अपनी-अपनी बीमारी, समय काटनेवाले, प्रेम बिरादरी, जिसकी छोड़ भागी है, किताबों की दूकान और दवाओं की, इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर। [***नस्तर***: निबंध-संग्रह – संपादन डॉ॰ मंजुलता]

(ख) आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए

हिन्दी साहित्य में व्यंग्य की उपस्थिति; हरिशंकर परसाई : जीवन और साहित्य; परसाई का साहित्यिक चिन्तन एवं विचारधारा; परसाई और परंपरागत कथा साहित्य : तुलनात्मक दृष्टि; युग चेतना और यथार्थबोध; आधुनिक कबीर : हरिशंकर परसाई; परसाई की भाषा, शैली एवं शिल्प; कहानीकार, निबंधकार एवं व्यंग्यकार के रूप में परसाई; परसाई और हिन्दी व्यंग्य साहित्य का विकास; परसाई एवं अन्य प्रमुख हिन्दी व्यंग्यकार; वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में परसाई की प्रासंगिकता।

अनुशंसित संदर्भ ग्रंथ

- नस्तर : निबंध-संग्रह – (सं॰) डॉ॰ मंजुलता
- हरिशंकर परसाई – विश्वनाथ त्रिपाठी
- व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई – डॉ॰ भरत पटेल
- हरिशंकर परसाई की दुनिया – डॉ॰ मनोहर देवालिया
- काल के कपाल पर हस्ताक्षर – राजेन्द्र चन्द्रकान्त राय
- परसाई के राजनैतिक व्यंग्य – (सं॰) भारतीय साहित्य संग्रह
- हिन्दी व्यंग्य की धार्मिक पुस्तक : हरिशंकर परसाई – प्रेम जनमेजय

सेमेस्टर-II CHM

M24-CHM-201 संवैधानिक, मानवीय, नैतिक मूल्य और बौद्धिक सम्पदा अधिकार

क्रेडिट : 2 अंक : 50

समय : 2 घण्टे परीक्षा अंक : 35, आंतरिक मूल्यांकन : 15

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

विद्यार्थियों में संवैधानिक, मानवीय, नैतिक मूल्यों की समझ विकसित करना एवं बौद्धिक संपदा अधिकारों की जानकारी प्रदान करना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

201.1 विद्यार्थी भारतीय संविधान में निहित बुनियादी संवैधानिक और नागरिक मूल्यों को समझ सकेंगे।

201.2 मानवीय गुणों, सामाजिक उत्तरदायित्व और पारस्परिक सम्मान के महत्व को आत्मसात् कर सकेंगे।

201.3 नैतिकता, व्यावसायिक आचरण और सामाजिक-लैंगिक संदर्भों में नैतिक मूल्य बोध का विश्लेषण कर सकेंगे।

201.4 बौद्धिक संपदा अधिकारों के प्रकार, संरक्षण, उल्लंघन एवं उससे जुड़ी कानूनी प्रक्रियाओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप से देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 07 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 28 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 01 अंक का होगा। यह खण्ड कुल 07 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु ऐसे व्यावहारिक एवं शोधोन्मुख विषय निर्धारित किए जाएं, जो विद्यार्थियों की विश्लेषण क्षमता, मौलिक चिंतन और साहित्यिक समझ के विकास में सहायक हों।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 **संवैधानिक मूल्य** : भारतीय संविधान का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य; राष्ट्रीय आंदोलन में सांस्कृतिक लोकाचार और आदर्शवाद; प्रस्तावना में निहित बुनियादी मूल्य; संवैधानिक नैतिकता की अवधारणा; देशभक्ति मूल्य और राष्ट्र निर्माण के तत्व; मौलिक अधिकार; राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत; मौलिक कर्तव्य और नागरिक मूल्य बोध।

इकाई-2 **मानवीय मूल्य** : मानवतावाद, मानवीय गुण; कर्तव्य और अधिकार; सामाजिक उत्तरदायित्व; दूसरों के प्रति सम्मान और दूसरों के साथ शांतिपूर्वक रहना; मार्गदर्शक मूल्य; बुनियादी मानवीय आकांक्षाएँ और उन्हें पूरा करने का तरीका; पारस्परिक सम्मान और सौहार्द; विश्वबन्धुत्व की भावना; प्रकृति और मानव : पारस्परिक सामंजस्य।

इकाई-3 **नैतिक मूल्य और व्यावसायिक आचरण** : नैतिकता एवं नैतिक मूल्य बोध; नैतिक शिक्षा और चरित्र निर्माण; संबंधों की नैतिकता : व्यैक्तिक, सामाजिक और व्यावसायिक संदर्भ में; नैतिक ह्रास और यौन संबंध; लैंगिक संदर्भ : प्रथाएं/मुद्दे और संवेदीकरण की आवश्यकता; पिछड़ा वर्ग (एससी, एसटी, ओबीसी और डीए) से संबंधित मुद्दे और सकारात्मक कार्रवाई की आवश्यकता; एच०आई०ई और नैतिक आचरण की चुनौतियाँ; छात्र नेतृत्व में नैतिकता की अनिवार्यता; व्यवसायिक नैतिकता; इंजीनियरिंग नैतिकता; सोशल मीडिया की नैतिकता।

इकाई-4 **बौद्धिक संपदा अधिकार** : बौद्धिक संपदा अधिकार : अर्थ, उत्पत्ति प्रकृति, तथा इसकी सुरक्षा के लिए आवश्यक उपाय। बौद्धिक संपदा अधिकार के विभिन्न रूप, स्वामित्व, कार्य, पंजीकरण; टी०आर०आई०पी०एस समझौता (1994) और डब्ल्यूटीओ; बौद्धिक संपदा अधिकार : उल्लंघन और अपराध - उपचार और दंड; आईटी अधिनियम 2000 - भारत में साइबर अपराधों के बुनियादी प्रावधान और अंकुश; साहित्यिक चोरी और बौद्धिक संपदा अधिकार का खतरा।

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- मानव मूल्य – सत्यव्रत शास्त्री
- बौद्धिक संपदा अधिकार – डॉ० एस० के० सैनी
- भारत का संविधान – डॉ० प्रमोद कुमार अग्रवाल
- नैतिक और मानवीय मूल्य – अजित नारायण त्रिपाठी
- सामाजिक एवं संवैधानिक मूल्य : अंर्तसंबंध और अंतर्द्वंद्व – सचिन कुमार जैन

सेमेस्टर-III CC-9

M24-HIN-301 साहित्यशास्त्र

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों की प्रमुख अवधारणाओं, प्रवृत्तियों और समीक्षात्मक दृष्टियों से विद्यार्थियों को परिचित कराना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

301.1 साहित्यशास्त्र की मूल अवधारणाओं तथा काव्य के स्वरूप, प्रयोजन और प्रकारों को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।

301.2 रस, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि और औचित्य जैसे प्रमुख काव्यशास्त्रीय सिद्धांतों का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।

301.3 प्लेटो, अरस्तू, लोंजाइनस, वर्डसवर्थ, कॉलरिज आदि पाश्चात्य चिंतकों के काव्य-सिद्धांतों को समझ सकेंगे।

301.4 आधुनिक विचार प्रवृत्तियों जैसे यथार्थवाद, संरचनावाद और विखण्डनवाद का आलोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 48 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु भारतीय सिद्धांतों तथा प्लेटो, अरस्तू, इलियट आदि पाश्चात्य विचारकों की दृष्टियों के तुलनात्मक, आलोचनात्मक एवं व्यावहारिक विश्लेषण पर केंद्रित विषय निर्धारित किए जाएं, जो विद्यार्थियों की काव्यविवेक, आलोचनात्मक दृष्टि और तुलनात्मक अध्ययन क्षमता को विकसित करें।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 साहित्यशास्त्र की अवधारणा; भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा; काव्य का स्वरूप : लक्षण, हेतु, प्रयोजन और प्रकार; काव्य के गुण-दोष; रस सिद्धांत : स्वरूप, रस के अंग, रस-निष्पति, साधारणीकरण और सहृदय की अवधारणा; अलंकार सिद्धांत : मूल स्थापनाएँ और वर्गीकरण।

इकाई-2 रीति सिद्धांत और उसकी स्थापनाएँ, रीति एवं शैली; वक्रोक्ति सिद्धांत और उसकी स्थापनाएँ; ध्वनि सिद्धान्त और उसकी स्थापनाएँ; औचित्य सिद्धांत और उसकी स्थापनाएँ।

इकाई-3 प्लेटो : काव्य-सिद्धांत; अरस्तू : अनुकरण, विरेचन-सिद्धांत और त्रासदी विवेचन; लोंजाइनस : उदात्त की अवधारणा; वर्डसवर्थ : काव्य-भाषा सिद्धांत; कॉलरिज : कल्पना और फैंटेसी।

इकाई-4 टी॰ एस॰ इलियट : निर्वैयक्तिता का सिद्धांत, परम्परा की अवधारणा और वैयक्तिक प्रतिभा; आई॰ ए॰ रिचर्ड्स : मूल्य, संप्रेषण और व्यावहारिक आलोचना; समकालीन काव्य-चिंतन : नयी समीक्षा, यथार्थवाद, संरचनावाद, उत्तरसंरचनावाद

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- भारतीय काव्य सिद्धांत – काका कालेलकर
- भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका – डॉ॰ नगेन्द्र
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा – डॉ॰ नगेन्द्र
- हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास – भगीरथ मिश्र
- काव्य चिन्तन की पश्चिमी परम्परा – निर्मला जैन
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत – देवेन्द्रनाथ शर्मा
- पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत – डॉ॰ हरिशचन्द्र वर्मा

सेमेस्टर-III CC-10

M24-HIN-302 हिन्दी भाषा और लिपि

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हिन्दी भाषा की ऐतिहासिक, भाषिक, लिपिक एवं संवैधानिक विशेषताओं को समग्र रूप में समझने की क्षमता विकसित करना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

302.1 हिन्दी भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विकास और विविध स्वरूपों का परिचय कराना।

302.2 हिन्दी की ध्वन्यात्मक, रूपात्मक और वाक्यात्मक संरचना की वैज्ञानिक समझ विकसित करना।

302.3 देवनागरी लिपि के उद्भव, विकास और मानकीकरण की प्रक्रिया से अवगत कराना।

302.4 हिन्दी की संवैधानिक मान्यता, राजभाषा के रूप में उसकी स्थिति और व्यावहारिक उपयोग को समझाना।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 48 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु हिन्दी भाषा के इतिहास, व्याकरणिक विश्लेषण, देवनागरी लिपि के मानकीकरण, वर्तनी सुधार, राजभाषा की स्थिति, और हिन्दी के प्रशासनिक उपयोग जैसे विषय निर्धारित किए जाएं, जो विद्यार्थियों की भाषावैज्ञानिक समझ, विश्लेषण क्षमता और व्यावहारिक दक्षता को विकसित करें।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 प्राचीन एवं मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ; आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का वर्गीकरण; हिन्दी की प्रमुख उपभाषाएँ एवं बोलियाँ; साहित्यिक भाषा के रूप में: अवधि; ब्रजभाषा; खड़ी बोली का विकास और विशेषताएँ।

इकाई-2 हिन्दी का भाषिक स्वरूप और व्याकरणिक विशेषताएँ; हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था; हिन्दी शब्द रचना; हिन्दी रूप रचना।

इकाई-3 हिन्दी वाक्य रचना; मानक हिन्दी के व्याकरणिक अवयव— संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण, अवयव, उपसर्ग, परसर्ग (कारक), प्रत्यय, लिंग, वचन।

इकाई-4 देवनागरी लिपि : उद्भव, विकास और विशेषताएँ; देवनागरी लिपि मानकीकरण के प्रयास (व्यक्तिगत, संस्थागत और प्रशासनिक प्रयास); हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण; हिन्दी की संवैधानिक स्थिति; राजभाषा हिन्दी की वर्तमान स्थिति, समस्याएँ और संभावनाएँ।

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- हिन्दी भाषा – भोलानाथ तिवारी
- हिन्दी भाषा एवं लिपि – ब्रजपाल
- हिन्दी व्याकरण – कामता प्रसाद गुरु
- हिन्दी भाषा और व्याकरण – वासुदेवनन्दन प्रसाद
- हिन्दी भाषा और नागरी लिपि – लक्ष्मीकान्त वर्मा
- हिन्दी : उद्भव और विकास – उदयनारायण तिवारी
- नागरी लिपि और उसकी समस्याएँ – डॉ॰ नरेश मिश्र
- हिन्दी : उद्भव, विकास और रूप – डॉ॰ हरदेव बाहरी
- देवनागरी लेखन तथा हिन्दी वर्तनी – लक्ष्मीनारायण शर्मा

सेमेस्टर-III DEC-3

M24-HIN-303 भारतीय साहित्य

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

भारतीय साहित्य की बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक परंपराओं को समग्र दृष्टिकोण से समझना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

303.1 विद्यार्थी भारतीयता, बहुभाषिकता और साहित्यिक समरसता की गहरी समझ विकसित करेंगे।

303.2 भारतीय साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों, लोकसंस्कृति और नैतिक मूल्यों का विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।

303.3 समकालीन भारतीय साहित्य में सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ और राष्ट्रबोध को पहचान सकेंगे।

303.4 'संस्कार' उपन्यास के माध्यम से परंपरा, आधुनिकता और मूल्य द्वंद्व को समझने की दृष्टि प्राप्त करेंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 48 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु भारतीयता, बहुभाषिकता, साहित्यिक समरसता, नवजागरण, लोकसंस्कृति, राष्ट्रबोध, समकालीन यथार्थ तथा 'संस्कार' उपन्यास में मूल्य द्वंद्व जैसे विषय निर्धारित किए जाएं, जो विद्यार्थियों की तुलनात्मक दृष्टि, विश्लेषण क्षमता और भारतीय साहित्य की समग्र समझ को विकसित करें।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 भारतीयता की अवधारणा और सांस्कृतिक विविधता; भारतीय भाषाओं का भाषिक संबंध : ऐतिहासिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य; भारतीय साहित्य का स्वरूप : परंपरा, आधुनिकता और समकालीनता; बहुभाषिकता और साहित्यिक समरसता; भारतीय भाषाओं का साहित्यिक वैभव।

इकाई-2 नवजागरण और भारतीय भाषाओं में आधुनिकता की शुरुआत; भारतीय साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ (19वीं सदी से वर्तमान तक); भारतीय साहित्य में लोकसंस्कृति की अभिव्यक्ति; भारतीय साहित्य में नैतिक मूल्यों की उपस्थिति; भारतीय साहित्य में भारतीय मूल्यों की अभिव्यक्ति।

इकाई-3 समकालीन भारतीय साहित्य में सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ; भारतीय भाषाओं में अनुवाद की भूमिका : भाषायी सेतु और साहित्यिक संवाद; भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब; भारतीय साहित्य : राष्ट्रीय संवेदना का साहित्यिक दस्तावेज।

इकाई-4 **संस्कार** (उपन्यास) : यू॰ आर॰ अनन्तमूर्ति

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- भारतीय साहित्य – डॉ॰ नगेन्द्र
- भारतीय साहित्य – भोला शंकर व्यास
- भारतीय साहित्य की अवधारणा – डॉ॰ राजेन्द्र मिश्र
- भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास – डॉ॰ नगेन्द्र
- भारतीय साहित्य : तुलनात्मक अध्ययन – इंद्रनाथ चौधरी

सेमेस्टर-III DEC-3

M24-HIN-304 हरियाणवी भाषा और साहित्य

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हरियाणवी भाषा, साहित्य और लोकसंस्कृति की परंपरा, समकालीन प्रयोगों एवं संरक्षण के प्रयासों का समग्र अध्ययन कराना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

304.1 छात्र हरियाणवी बोली की उत्पत्ति, विकास और प्रमुख बोलियों की सामाजिक-भौगोलिक विशेषताओं को समझेंगे।

304.2 वे हरियाणवी साहित्य की विविध विधाओं और रचनाकारों की साहित्यिक भूमिका का विश्लेषण कर सकेंगे।

304.3 भाषा-संरक्षण, अस्मिता और शैक्षणिक संभावनाओं से संबंधित मुद्दों पर गहरी समझ विकसित होगी।

304.4 परंपरागत कथा-रूपों के माध्यम से सांस्कृतिक स्मृति और सामाजिक चेतना को समझने की क्षमता विकसित होगी।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 48 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु हरियाणवी भाषा, बोली, लोक साहित्य, समकालीन भाषिक प्रयोग, लोककथाएँ एवं सांस्कृतिक संदर्भों पर केंद्रित विषय निर्धारित किए जाएं, जो विद्यार्थियों की भाषिक समझ, सांस्कृतिक चेतना, विश्लेषण क्षमता, अभिव्यक्ति कौशल और आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करें।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 हरियाणवी बोली की उत्पत्ति और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि; हरियाणवी की प्रमुख बोलियाँ : भौगोलिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य; हरियाणवी बोली और हिंदी भाषा के मध्य संबंध एवं प्रभाव; हरियाणवी में रचित साहित्य: मौखिक और लिखित परंपराएँ; साहित्य की प्रमुख विधाएँ; हरियाणवी साहित्य की परंपरा : उद्भव, विकास और प्रमुख रचनाकार।

इकाई-2 हरियाणवी सिनेमा का विकास और भाषिक स्वरूप; सोशल मीडिया में हरियाणवी बोली का स्वरूप और भूमिका; मीडिया व डिजिटल मंचों पर हरियाणवी भाषा और साहित्य की संभावनाएँ; हरियाणवी रैप, स्टैंड-अप कॉमेडी और नए भाषिक प्रयोग; वैश्विक मंच पर हरियाणवी भाषा की उपस्थिति और सांस्कृतिक स्वीकार्यता।

इकाई-3 शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में हरियाणवी बोली की अनिवार्यता और संभावनाएँ; नई पीढ़ी बनाम हरियाणवी बोली की अस्मिता का प्रश्न; हरियाणवी भाषा संरक्षण की प्रमुख चुनौतियाँ; भाषा नीति और प्रशासनिक स्तर पर हरियाणवी की वर्तमान स्थिति; हरियाणवी भाषा के उन्नयन में सांस्कृतिक संस्थाओं, अकादमियों और सरकारी प्रयासों की भूमिका।

इकाई-4 **कौशलपूर्ण कथाएँ, नीति व उपदेश प्रधान कथाएँ** और **बुझौवल** [इन शीर्षकों में संकलित लोककथाएँ]
[पाठ्य सामग्री: ***हरियाणवी लोक कथाएँ***– सं० डॉ० शंकर लाल यादव, हरियाणा साहित्य अकादमी]

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- लोकसाहित्य की भूमिका – डॉ० धीरेन्द्र वर्मा
- हरियाणा का लोक साहित्य – शंकरलाल यादव
- लोक साहित्य : विविध आयाम – डॉ० राम मेहर सिंह
- हरियाणा लोकसाहित्य : सांस्कृतिक संदर्भ – डॉ० भीम सिंह मलिक
- हरियाणा साहित्य विशेषांक, हरिगंधा पत्रिका, सितम्बर-दिसम्बर 1988
- हरियाणवी लोक-साहित्य विशेषांक, संभावना पत्रिका, अंक 22, वर्ष 2003

सेमेस्टर-III DEC-4

M24-HIN-305 समकालीन हिन्दी कविता

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

समकालीन हिन्दी कविता के सामाजिक, वैचारिक, सौंदर्यात्मक और भाषिक संदर्भों का सम्यक अध्ययन कराना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

305.1 विद्यार्थी समकालीनता की अवधारणा और हिन्दी कविता के ऐतिहासिक परिवेश को समझ सकेंगे।

305.2 वे कविता में सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मुद्दों की प्रस्तुति का विश्लेषण कर सकेंगे।

305.3 प्रमुख कवियों की रचनाओं के माध्यम से साहित्यिक आंदोलनों और काव्य प्रवृत्तियों की पहचान कर सकेंगे।

305.4 डिजिटल युग में कविता की प्रस्तुति, शैली और पाठकीयता के बदलते रूपों को समझने में सक्षम होंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 48 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु समकालीन हिन्दी कविता के विशिष्ट संदर्भों पर केंद्रित विषय निर्धारित किए जाएं, जो विद्यार्थियों की विश्लेषण क्षमता, वैचारिक गहराई, समसामयिक समझ, सामाजिक चेतना, और समकालीन साहित्यिक अभिव्यक्ति को विकसित करें।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 समकालीनता की अवधारणा और सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि; आपातकाल और कविता: प्रतिरोध एवं वैचारिक स्वर; विभिन्न काव्य आंदोलनों का परिचय एवं कविता की वापसी; काव्य आंदोलनों का वैचारिक स्वरूप और सामाजिक सरोकार।

इकाई-2 समकालीन हिन्दी कविता का लोकतांत्रिक स्वरूप; लोक जीवन, पर्यावरण एवं वैश्विक चेतना की अभिव्यक्ति; कविता में व्यक्ति और समाज का द्वंद्व; समकालीन कविता की भाषा और शैली; कविता में कथ्य और शिल्प के नए प्रयोग; डिजिटल युग में कविता का स्वरूप, वितरण और पाठकीयता।

इकाई-3 **दुष्यन्त कुमार** : मैं जिसे ओढ़ता-बिछाता हूँ; आज वीरान अपना घर देखा; **कुमार विकल** : खौफनाक समय के बच्चे; **ओमप्रकाश वाल्मीकि** : ठाकुर का कुआँ; **अरूण कमल** : अपनी केवल धार; **कुमार अंबुज** : किवाड़, क्रूरता; **सारस्वत मोहन 'मनीषी'** : शहीद की वेदना; **अदनान कफ़ील दरवेश** : ठिठुरते लैम्प पोस्ट, नीली बयाज़।

इकाई-4 **कात्यायनी** : सात भाइयों के बीच चम्पा; **अनामिका** : स्त्रियाँ, बेजगह; **निर्मला गर्ग** : जीने की शर्त; **गगन गिल** : एक दिन लौटेगी लड़की, दिन के दुख अलग थे; **निर्मला पुतुल** : क्या तुम जानते हो; उतनी दूर मत ब्याहना बाबा!
[पाठ्य सामग्री: ***समय के स्वर*** (काव्य संग्रह) – (सं०) डॉ० मंजुलता]

अनुशंसित सन्दर्भ ग्रन्थ

- कविता के नए प्रतिमान – नामवर सिंह
- नए प्रतिमान पुराने निकष – लक्ष्मीकान्त वर्मा
- हिन्दी काव्य का इतिहास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
- शुद्ध कविता के खोज – रामधारी सिंह 'दिनकर'
- समकालीन हिन्दी कविता – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

सेमेस्टर-III DEC-4

M24-HIN-306 कथेतर गद्य साहित्य

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

विद्यार्थियों को हिन्दी कथेतर गद्य साहित्य की विविध विधाओं, उनके विकास तथा प्रमुख रचनाओं की समझ प्रदान करना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

306.1 विद्यार्थी आत्मकथा, यात्रा-वृत्तांत, संस्मरण आदि कथेतर विधाओं के स्वरूप और विकास को समझ सकेंगे।

306.2 वे प्रमुख लेखिकाओं/लेखकों की कृतियों का विश्लेषण कर सकेंगे।

306.3 कथेतर गद्य में व्यक्त अनुभवों, संवेदनाओं और यथार्थ के स्वरूप को आलोचनात्मक दृष्टि से पढ़ सकेंगे।

306.4 वे साहित्य और समाज के अंतःसंबंध को इन विधाओं के माध्यम से समझने में सक्षम होंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 48 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु हिन्दी कथेतर गद्य की विविध विधाओं जैसे आत्मकथा, यात्रा-वृत्तांत, संस्मरण आदि में से किसी एक पर आधारित आलोचनात्मक विश्लेषण, लेखकीय अनुभव एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य पर केंद्रित विषय निर्धारित किए जाएं, जो विद्यार्थियों की विवेचनात्मक दृष्टि, संदर्भ बोध और कथेतर गद्य अभिव्यक्ति की समझ को विकसित करें।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 कथेतर गद्य साहित्य की परिभाषा, विशेषताएँ एवं साहित्यिक महत्त्व; आत्मकथा, जीवनी, यात्रा-वृत्तांत, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज और डायरी: स्वरूप, संरचना एवं अंतर; कथेतर विधाओं का ऐतिहासिक विकास और हिन्दी साहित्य में उनका उद्भव; सामाजिक यथार्थ, व्यक्तिगत अनुभव और समकालीन संदर्भों में कथेतर लेखन की प्रासंगिकता; हिन्दी में कथेतर गद्य लेखन की परंपरा और समकालीन प्रवृत्तियाँ।

इकाई-2 **आत्मकथा** - एक कहानी यह भी (मन्नू भंडारी)

इकाई-3 **यात्रा-वृत्तांत** - आज़ादी मेरा ब्रांड (अनुराधा बेनीवाल)

इकाई-4 **संस्मरण** - गुरु जी की खेती बारी (विश्वनाथ त्रिपाठी)

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- एक कहानी यह भी है – मन्नू भंडारी
- हिन्दी गद्य साहित्य – रामचन्द्र तिवारी
- आज़ादी मेरा ब्रांड – अनुराधा बेनीवाल
- गुरु जी की खेती बारी – विश्वनाथ त्रिपाठी
- हिन्दी कथेतर गद्य परम्परा – दयानिधि मिश्र
- छायावादोत्तर गद्य साहित्य – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
- हिन्दी गद्य का विन्यास और विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी

सेमेस्टर-III DEC-5

M24-HIN-307 सृजनात्मक लेखन

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

विद्यार्थियों में मौलिक, प्रभावशाली और बहुविध लेखन क्षमता का विकास करना है।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

307.1 सृजनात्मक लेखन की विभिन्न विधाओं की पहचान और उनकी रचना प्रक्रिया को समझ सकेंगे।

307.2 छात्र कविता, कहानी, नाटक एवं विविध विधाओं में स्वतंत्र लेखन का अभ्यास कर सकेंगे।

307.3 डिजिटल और प्रिंट मीडिया में लेखन की तकनीकी समझ और प्रकाशन की प्रक्रिया से परिचित होंगे।

307.4 छात्र लेखन को करियर विकल्प के रूप में अपनाने हेतु आवश्यक कौशल, मंच और संसाधनों का प्रयोग कर सकेंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 48 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु कविता, कहानी, यात्रा-वृत्तांत एवं ब्लॉग लेखन जैसे विविध लेखन स्वरूपों में रचनात्मक अभ्यास, लेखकीय प्रक्रिया का आत्मविश्लेषण, एवं डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लेखन की संभावनाओं पर केंद्रित विषय निर्धारित किए जाएं, जो विद्यार्थियों की लेखन-कौशल को विकसित करें।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 सृजनात्मक लेखन की परिभाषा, प्रकृति, उद्देश्य और महत्व; लेखन प्रक्रिया: विचार, योजना, प्रारूप, संशोधन और प्रस्तुति; भाषा, शिल्प और शैली; सृजनात्मक अभिव्यक्ति के मूल तत्व; प्रेरणा, मौलिकता और कल्पनाशीलता का लेखन में योगदान; लेखक के अनुभव, संवेदना और समाज के साथ संबंध।

इकाई-2 **कविता लेखन**: काव्य भाषा, प्रतीक, बिंब और संवेदनशीलता; **कहानी लेखन**: कथावस्तु, प्लॉट संरचना, चरित्र निर्माण, और संवाद; **निबंध लेखन**: विचारों की संरचना, तर्क-विवेचन और शैली; **यात्रा-वृत्तांत लेखन**: अनुभवों का दस्तावेजीकरण और वर्णनात्मक शैली।

इकाई-3 लेखन से प्रकाशन तक: पांडुलिपि, संपादन, प्रूफ, डिजाइन और विमोचन; प्रकाशन के माध्यम: पारंपरिक (प्रिंट) बनाम आधुनिक (डिजिटल) प्लेटफॉर्म; करियर विकल्प: स्वतंत्र लेखक, संपादक, कंटेंट क्रिएटर, स्क्रिप्ट राइटर, कॉपीराइटर; साहित्यिक मंच, प्रतियोगिताएँ, कार्यशालाएँ और पुरस्कार।

इकाई-4 डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लेखन के नए आयाम: ब्लॉग, पोडकास्ट, ई-बुक; **ब्लॉग लेखन**: प्रारंभिक तैयारी, विषय चयन, टोन और टाइटल की भूमिका; **सोशल मीडिया लेखन**: लघु पोस्ट, कैप्शन लेखन और रील स्क्रिप्ट; **वेब लेखन**: स्पष्टता, पठनीयता और एसईओ का महत्व; समीक्षात्मक लेखन (बुक/फिल्म/सीरीज समीक्षा) में संभावनाएँ।

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- डिजिटल युग में लेखन – डॉ॰ अरविन्द कुमार
- कहानी और कविता लेखन – डॉ॰ निर्मला जोशी
- सृजनात्मक लेखन की कला – डॉ॰ रघुवीर शरण
- सृजनात्मक लेखन और व्यवसायिकता – नवीन शर्मा
- साहित्य और सृजनात्मकता – डॉ॰ श्याम सुन्दर त्रिपाठी

सेमेस्टर-III DEC-5

M24-HIN-308 अनुवाद विज्ञान

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

विद्यार्थियों को अनुवाद के सिद्धांत, प्रक्रिया, विविध प्रकारों और व्यावहारिक उपयोगों की समग्र समझ प्रदान करना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

308.1 विद्यार्थी अनुवाद की प्रकृति और परंपरा को बौद्धिक रूप से समझ सकेंगे।

308.2 वे विभिन्न प्रकार के अनुवाद (जैसे साहित्यिक, कार्यालयी) का विश्लेषण कर सकेंगे।

308.3 अनुवाद में आने वाली व्यावहारिक समस्याओं, सीमाओं और दायित्वों का समाधान सुझा सकेंगे।

308.4 वैश्वीकरण के सन्दर्भ में अनुवाद की भूमिका को समझते हुए उसे व्यावहारिक रूप दे सकेंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 48 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु अनुवाद प्रक्रिया, विविध प्रकारों, भाषांतर मूल्यांकन तथा वैश्विक सन्दर्भ में अनुवाद की भूमिका पर केंद्रित विषय निर्धारित किए जाएं, जो विद्यार्थियों की व्यावहारिक दक्षता, भाषिक बारीकी और संदर्भ-संवेदनशीलता को विकसित करें।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 अनुवाद : अर्थ स्वरूप और विस्तार; अनुवाद और भाषा का संबंध; स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा से अभिप्राय; अनुवाद, विज्ञान, कला, शिल्प या शास्त्र; अनुवाद की परम्परा; अनुवाद की प्रासंगिकता।

इकाई-2 अनुवाद की प्रक्रिया; अनुवाद के क्षेत्र एवं प्रकार; अनुवाद की सीमाएँ और समस्याएँ; अनुवादक के गुण, दायित्व और कर्तव्य; अनुवाद के सिद्धांत।

इकाई-3 अनुवाद पुनरीक्षण-मूल्यांकन; तत्काल भाषांतरण : अर्थ, स्वरूप और प्रक्रिया; अनुवाद और तत्काल भाषांतरण में अंतर; मशीन अनुवाद और उसकी समस्याएँ; वैश्वीकरण और अनुवाद।

इकाई-4 साहित्यिक अनुवाद : काव्यानुवाद एवं गद्यानुवाद; कार्यालयी अनुवाद; मीडिया और अनुवाद; ज्ञान विज्ञान का साहित्य और अनुवाद; बैंक, बीमा, वित्त और वाणिज्य में अनुवाद।

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- अनुवाद विज्ञान – भोलानाथ तिवारी
- अनुवाद विज्ञान और संप्रेषण – डॉ॰ हरिमोहन शर्मा
- अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग – डॉ॰ जी॰ गोपीनाथन
- सृजनात्मक साहित्य और अनुवाद – सं॰ सुरेश सिंघल
- अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत और अनुप्रयोग – डॉ॰ नगेन्द्र
- अनुवाद कला सिद्धांत और प्रयोग – कैलाशचन्द्र भाटिया
- सूचना साहित्य : अनुवाद की चुनौतियाँ – डॉ॰ ओ॰ वासवन
- हिन्दी अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग – डॉ॰ वासुदेव नंदन प्रसाद

सेमेस्टर-III OEC

M24-HIN-309 हिन्दी भाषा अनुप्रयोग

क्रेडिट : 2 अंक : 50

समय : 2 घण्टे परीक्षा अंक : 35, आंतरिक मूल्यांकन : 15

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हिन्दी भाषा के व्यावहारिक, तकनीकी और वैश्विक अनुप्रयोगों की सैद्धांतिक और व्यवहारिक समझ विकसित करना है।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

309.1 विद्यार्थी भाषा के सामाजिक-सांस्कृतिक स्वरूप और हिन्दी भाषा समुदाय की विशेषताओं को समझ सकेंगे।

309.2 वे हिन्दी की राजभाषा नीति तथा प्रशासन, शिक्षा एवं संचार में उसके प्रयोग का विश्लेषण कर सकेंगे।

309.3 वर्तनी मानकीकरण और तकनीकी लेखन में हिन्दी की भूमिका के प्रति उनमें व्यवहारिक दृष्टिकोण विकसित होगा।

309.4 डिजिटल, व्यावसायिक क्षेत्रों में हिन्दी के उपयोग तथा स्वरोजगार में हिन्दी की संभावनाओं को पहचान सकेंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 07 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 28 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 07 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु हिन्दी की राजभाषा नीति, डिजिटल माध्यमों में हिन्दी का प्रयोग, तकनीकी लेखन की विधियाँ, तथा स्वरोजगार में हिन्दी की भूमिका पर केंद्रित विषय निर्धारित किए जाएं, जो विद्यार्थियों की व्यावहारिक दक्षता, भाषिक सृजनात्मकता और रोजगारपरक दृष्टि का संवर्धन करें।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 भाषा : परिभाषा, कार्य और विशेषताएँ; भाषा, मनुष्य और समाज का परस्पर संबंध; भाषा, संस्कृति और साहित्य; हिन्दी भाषा समुदाय : संरचना, सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि।

इकाई-2 मानक भाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा; वर्तमान में हिन्दी की संवैधानिक स्थिति; राजभाषा नीति और कार्यान्वयन की चुनौतियाँ; हिन्दी का कार्यालय, न्याय, शिक्षा और संचार में प्रयोग।

इकाई-3 देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता और संरचना; हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण; तकनीकी और वैज्ञानिक लेखन में हिन्दी की भूमिका।

इकाई-4 कार्यालयी, विधिक, तकनीकी और व्यावसायिक हिन्दी; सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल टूल्स में हिन्दी; हिन्दी और स्वरोजगार : अनुवाद, सबटाइटलिंग, टाइपिंग, सामग्री निर्माण; विदेशों में हिन्दी।

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- कंप्यूटर और हिन्दी – हरिमोहन
- हिन्दी व्याकरण – कामता प्रसाद गुरु
- हिन्दी व्याकरण – किशोरीदास वाजपेयी
- हिन्दी उद्भव और विकास – हरदेव बाहरी
- प्रशासन में राजभाषा हिन्दी – कैलाशचन्द्र भाटिया
- प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूप – राजेन्द्र मिश्र
- आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना – वासुदेव नंदन
- हिन्दी भाषा उद्भव और विकास – उदयनारायण तिवारी
- कार्यालय प्रयोग में हिन्दी की दिशाएँ – (सं०) उमा शुक्ल
- हिन्दी भाषा संरचना के विविध आयाम – रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव

सेमेस्टर-IV CC-11

M24-HIN-401 शोध-प्रविधि

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

छात्रों को साहित्यिक शोध की प्रविधियों, पद्धतियों और प्रक्रिया की समग्र एवं व्यावहारिक समझ प्रदान करना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

401.1 शोध की मूल अवधारणाओं, उद्देश्यों और भेदों का आलोचनात्मक विश्लेषण कर सकेंगे।

401.2 विभिन्न शोध पद्धतियों का तुलनात्मक विवेचन करते हुए उपयुक्त पद्धति का चयन कर सकेंगे।

401.3 डेटा संकलन के आधुनिक उपकरणों और तकनीकों का व्यवहारिक प्रयोग कर सकेंगे।

401.4 शोध प्रस्ताव, अध्याय योजना, संदर्भ निर्माण व नैतिक आचार-संहिता के पालन में सक्षम होंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 48 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु **शोध प्रस्ताव,** पद्धति विश्लेषण, शोध नैतिकता, संदर्भ प्रणाली, डेटा संग्रहण, तकनीकी उपकरणों के प्रयोग तथा प्रस्तुतीकरण पर केंद्रित विषय निर्धारित किए जाएं, जो विद्यार्थियों की अनुसंधानात्मक समझ, तार्किक दृष्टि, प्रस्तुतीकरण क्षमता और बौद्धिक ईमानदारी को विकसित करें।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 शोध : अर्थ, उद्देश्य, स्वरूप; शोध, अनुसंधान, गवेषणा और सर्वेक्षण; तथ्य और सत्य का अंतर्संबंध; कल्पना, परिकल्पना और विपरीत कल्पना; साहित्यिक बनाम वैज्ञानिक शोध : तुलनात्मक दृष्टि।

इकाई-2 साहित्यिक शोध-पद्धतियाँ : ऐतिहासिक, तुलनात्मक, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय, भाषावैज्ञानिक; पाठालोचनात्मक और मूल्यांकनात्मक पद्धतियाँ; अंतरानुशासनिक, सांस्कृतिक एवं दार्शनिक शोध; समकालीन शोध प्रवृत्तियाँ : विमर्श-आधारित शोध, नरेटोलॉजी, डिजिटल ह्यूमैनिटीज़।

इकाई-3 शोध विषय का चयन : मापदंड और प्रक्रिया; शोध समस्या एवं उद्देश्यों का निर्धारण; प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग; सामग्री संकलन की प्रविधियाँ : पुस्तकालय, फील्ड वर्क, साक्षात्कार, प्रश्नावली; शोध के उपकरण : उद्धरण, नोट्स, वर्गीकरण; शोध निर्देशक एवं शोधार्थी की भूमिकाएँ और शोध आचार-संहिता।

इकाई-4 शोध प्रबन्ध की रूपरेखा और अध्याय योजना; ग्रंथ सूची एवं संदर्भ-सूची निर्माण की विधियाँ (MLA 9, APA 7, ICMJE तथा अन्य मानक शैलियाँ आदि); साहित्यिक चोरी, बौद्धिक ईमानदारी और शोध नैतिकता; RefWorks, Zotero, Turnitin, Grammarly जैसे उपकरणों का प्रयोग; शोध लेखन की भाषा, शैली एवं अनुशासन।

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- शोध प्रविधि – शशि भूषण सिंह
- शोध प्रविधि – डॉ॰ विनय मोहन शर्मा
- अनुसंधान प्रविधि, प्रक्रिया विषयक लेख – डॉ॰ नगेन्द्र
- अनुसंधान प्रविधि : सिद्धांत और प्रक्रिया – एस॰ एन॰ गणेशन
- शोध : स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि – बैजनाथ सिंहल
- *Research and Publication Ethics* – UGC MOOC

सेमेस्टर-IV CC-12

M24-HIN-402 भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

भाषा विज्ञान की मूल अवधारणाओं तथा हिन्दी भाषा की संरचना, विकास और विविधता की वैज्ञानिक समझ विकसित करना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

402.1 छात्र भाषा और भाषा विज्ञान की प्रकृति, स्वरूप एवं क्षेत्र को समझ सकेंगे।

402.2 छात्र भाषा के विकास, परिवर्तन और विविध रूपों का विश्लेषण कर सकेंगे।

402.3 हिन्दी ध्वनियों की वैज्ञानिक पहचान एवं ध्वनि परिवर्तन की प्रवृत्तियों को जान सकेंगे।

402.4 शब्द और अर्थ की अवधारणाओं को समझकर भाषाविज्ञान की साहित्यिक उपयोगिता को पहचान सकेंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 48 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु ऐसे विषय दिए जाएं, जो भाषा और भाषा-विज्ञान की संरचना, हिन्दी भाषा की सामाजिक एवं ऐतिहासिक स्थिति, ध्वनि एवं शब्द संरचना, भाषिक विविधता, तथा वाक्य-विश्लेषण के माध्यम से विद्यार्थियों की भाषिक बोध, विश्लेषण क्षमता, तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करें।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 भाषा : परिभाषा, प्रकृति (विशेषताएँ) एवं महत्व; भाषा की संरचना और भाषिक आधार; भाषाविज्ञान का स्वरूप, उद्देश्य एवं अध्ययन क्षेत्र; भाषाविज्ञान के अध्ययन की दिशाएँ; साहित्य के अध्ययन में भाषाविज्ञान की उपादेयता।

इकाई-2 भाषा विकास एवं परिवर्तन के कारण; भाषा के विविध रूप : लिखित रूप और उच्चरित रूप; मातृभाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा; भाषा और बोली में अन्तर; हिन्दी भाषा की सामाजिक स्थिति और विविधता।

इकाई-3 ध्वनि: परिभाषा, वैज्ञानिक आधार एवं वर्गीकरण; ध्वनि उत्पत्ति की प्रक्रिया एवं ध्वनि यंत्र; हिन्दी ध्वनियों का परिचय एवं वर्गीकरण; खंड्य एवं खंडेत्तर ध्वनियाँ; ध्वनि परिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ; ध्वनि गुण।

इकाई-4 शब्द: व्युत्पत्ति, परिभाषा और भेद; वाक्य: परिभाषा, संरचना और भेद; वाक्य परिवर्तन के कारण एवं दिशाएँ; अर्थ की अवधारणा एवं शब्द-अर्थ का संबंध।

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- भाषाविज्ञान – कपिलदेव द्विवेदी
- हिन्दी भाषा एवं लिपि – ब्रजपाल
- भाषा विज्ञान – डॉ॰ भोलानाथ तिवारी
- हिन्दी उद्भव और विकास – डॉ॰ हरदेव बाहरी
- भाषा विज्ञान की भूमिका – डॉ॰ देवेन्द्रनाथ शर्मा
- भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा – डॉ॰ रामदरश राय
- हिन्दी भाषा उद्भव और विकास – उदयनारायण तिवारी
- आधुनिक भाषाविज्ञान – कृपाशंकर सिंह एवं चतुर्भुज सहाय
- हिन्दी भाषा संरचना के विविध आयाम – रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव

सेमेस्टर-IV DEC-6

M24-HIN-403 साहित्य और विमर्श

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

साहित्य के माध्यम से समकालीन विमर्शों की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक समझ को विकसित करना है।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

403.1 विद्यार्थी साहित्य और विमर्श के बीच अंतर्संबंधों को समझ सकेंगे।

403.2 वे विमर्श की अवधारणाओं को ऐतिहासिक और सैद्धांतिक दृष्टि से विश्लेषित कर सकेंगे।

403.3 साहित्य के माध्यम से सामाजिक न्याय, अस्मिता और प्रतिरोध की चेतना विकसित होगी।

403.4 विमर्श आधारित साहित्य की आलोचनात्मक और वस्तुनिष्ठ समीक्षा करने में सक्षम बन सकेंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 48 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु ऐसे विषय दिए जाएं, जो स्त्री, दलित और आदिवासी विमर्श की ऐतिहासिकता, सामाजिक-सांस्कृतिक संघर्ष, अस्मिता की स्थापना, सत्ता-विमर्श, साहित्यिक प्रतिरोध, विचारधारात्मक मुठभेड़, पाठ विश्लेषण, लेखकीय दृष्टिकोण तथा समकालीन विमर्शों के अंतर्संबंधों के आलोचनात्मक अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों की सैद्धांतिक समझ, मौलिक विवेक और मूल्यांकन क्षमता को विकसित करें।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 विमर्श : परिभाषा, उद्देश्य और दार्शनिक पृष्ठभूमि; विमर्श, सत्ता और विचारधारा; साहित्य और विमर्श के अंतर्संबंध; उत्तर-औपनिवेशिकता, विमर्श और भाषिक राजनीति; समकालीन हिन्दी साहित्य में विमर्श की उपस्थिति और महत्त्व।

इकाई-2 स्त्री विमर्श : ऐतिहासिक विकास, स्वरूप और वैचारिक परिप्रेक्ष्य; पितृसत्ता, लैंगिक असमानता और स्त्री अस्मिता; स्त्री लेखन बनाम स्त्री विषयक लेखन; मुख्य विचारक; स्त्री विमर्श और समकालीन साहित्य में प्रतिरोध की अभिव्यक्ति।

इकाई-3 दलित विमर्श की अवधारणा, उद्भव और वैचारिक पृष्ठभूमि; डॉ॰ भीमराव अंबेडकर का दृष्टिकोण और उनका साहित्यिक प्रभाव; दलित आत्मकथाएँ : सामाजिक यथार्थ और अस्मिता; दलित साहित्य का सामाजिक परिवर्तन में योगदान; प्रमुख लेखक और रचनाएँ; हिन्दी दलित साहित्य में भाषा, शैली और प्रतीक की भूमिका।

इकाई-4 आदिवासी विमर्श : स्वरूप, अस्मिता, सांस्कृतिक दृष्टिकोण; आदिवासी समाज की प्रमुख समस्याएँ : विस्थापन, शोषण, जंगल-जमीन का संघर्ष; आदिवासी ज्ञान परंपरा और सांस्कृतिक मूल्य; आदिवासी साहित्य बनाम लोक साहित्य; प्रमुख लेखक और रचनाएँ; भाषा और पहचान का संकट तथा साहित्यिक प्रतिरोध।

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- स्त्रियों की पराधीनता – जॉन स्टुअर्ट मिल
- दलित विमर्श की भूमिका – कँवल भारती
- आदिवासी साहित्य विमर्श – गंगा सहाय मीणा
- विमर्श के विविध आयाम – डॉ॰ अर्जुन चव्यहाण
- स्त्री विमर्श : भारतीय परिप्रेक्ष्य – डॉ॰ के एम॰ मालती
- हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी

सेमेस्टर-IV DEC-6

M24-HIN-404 हिन्दी आलोचना

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हिंदी आलोचना की विकास यात्रा, प्रवृत्तियों और प्रमुख आलोचकों की समीक्षा दृष्टि से विद्यार्थियों को परिचित कराना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

404.1 हिंदी आलोचना की अवधारणा, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और विकास को समझने में सक्षम होंगे।

404.2 हिंदी आलोचकों की समीक्षा दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।

404.3 आलोचना की प्रमुख प्रवृत्तियों की विशेषताओं को विश्लेषित कर सकेंगे।

404.4 समकालीन और आधुनिक विमर्शों की आलोचनात्मक विशेषताओं को समझ सकेंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 48 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु ऐसे व्यावहारिक विषय हों, जो आलोचना की परंपरा, प्रमुख आलोचकों की दृष्टि, मूल्यांकन कौशल, पाठ विश्लेषण, तथा समकालीन विमर्शों के आलोचनात्मक विश्लेषण द्वारा विद्यार्थियों के विवेक, तुलना-क्षमता, सैद्धांतिक समझ और रचनात्मक दृष्टिकोण को विकसित करें।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 हिन्दी आलोचना : अवधारणा, आवश्यकता और स्वरूप; भारतेन्दु पूर्व हिन्दी आलोचना; भारतेन्दु युगीन हिंदी आलोचना; द्विवेदी युगीन हिन्दी आलोचना और उसके विविध रूप।

इकाई-2 हिन्दी आलोचना और आचार्य रामचंद्र शुक्ल; हजारीप्रसाद द्विवेदी और हिन्दी आलोचना का विस्तार; डॉ॰ नगेन्द्र की आलोचना दृष्टि; शुक्लोत्तर आलोचना प्रवृत्तियाँ : स्वच्छंदतावादी समीक्षा; ऐतिहासिक समीक्षा

इकाई-3 रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि और योगदान; नामवर सिंह की आलोचना दृष्टि और योगदान; प्रमुख विचारधारात्मक प्रवृत्तियाँ : प्रगतिवादी समीक्षा; मनोविश्लेषणवादी समीक्षा।

इकाई-4 रचनाकार आलोचकों की आलोचना दृष्टि (अज्ञेय, मुक्तिबोध और विजयदेव नारायण साही); समकालीन समीक्षा: विविध प्रवृत्तियाँ और समकालीन चुनौतियाँ; स्त्री विमर्श : प्रमुख आलोचक एवं अवधारणाएँ; दलित विमर्श : प्रमुख आलोचक एवं आलोचना की दृष्टियाँ

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- हिन्दी आलोचना – विश्वनाथ त्रिपाठी
- दूसरी परंपरा की खोज – नामवर सिंह
- आलोचक और आलोचना – बच्चन सिंह
- हिन्दी आलोचना का विकास – नंदकिशोर नवल
- आलोचना के प्रगतिशील आयाम – शिवकुमार मिश्र
- हिन्दी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार – कृष्णदत्त पालीवाल
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना – रामविलास शर्मा

सेमेस्टर-IV DEC-7

M24-HIN-405 साहित्य की वैचारिक भूमि

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

भारतीय ज्ञान परंपरा, नवजागरण और आधुनिक बौद्धिक प्रवृत्तियों के आलोक में हिन्दी साहित्य की वैचारिक भूमि की समग्र समझ विकसित करना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

405.1 छात्र भारतीय दर्शन की प्रमुख धाराओं और उनके साहित्यिक प्रभाव को समझ सकेंगे।

405.2 वे नवजागरण काल और सामाजिक आंदोलनों की वैचारिक भूमिका का विश्लेषण कर सकेंगे।

405.3 आधुनिक विचारधाराओं जैसे मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषणवाद का साहित्य में प्रभाव जान सकेंगे।

405.4 विद्यार्थी साहित्य और समाज के अंतर्संबंधों की गहरी समझ विकसित कर सकेंगे।।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 48 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु ऐसे विषय निर्धारित किए जाएं, जो भारतीय ज्ञान परंपरा, नवजागरण, आधुनिक विचारधाराओं एवं साहित्य-सामाज अंतर्संबंधों पर केंद्रित होकर विद्यार्थियों की आलोचनात्मक दृष्टि, मौलिक चिंतन तथा वैचारिक-साहित्यिक समझ के विकास में सहायक हों।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 भारतीय ज्ञान परंपरा; भारतीय बौद्धिक चेतना में वैदिक दर्शन की भूमिका; भारतीय परंपरा में प्रमुख दार्शनिक धाराएँ : अद्वैतवाद, शुद्धाद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद, द्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद; बौद्ध दर्शन एवं जैन दर्शन।

इकाई-2 भारतीय नवजागरण की ऐतिहासिक एवं वैचारिक पृष्ठभूमि; राजाराम मोहन राय : नवजागरण के अग्रदूत; हिन्दी नवजागरण की सामाजिक एवं भाषिक विशेषताएँ; खड़ी बोली आन्दोलन और फोर्ट विलियम कॉलेज का योगदान; स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्रवाद का साहित्यिक प्रभाव;

इकाई-3 हिन्दी नवजागरण और भारतेन्दु युग; हिन्दी नवजागरण द्विवेदी युग; गांधीवादी विचारधारा और हिन्दी साहित्य; डॉ॰ अम्बेडकर का सामाजिक दृष्टिकोण और प्रभाव; डॉ॰ राममनोहर लोहिया की वैचारिक पृष्ठभूमि और भाषा दृष्टि।

इकाई-4 मार्क्सवाद : अवधारणा और स्वरूप; अस्तित्ववाद : अवधारणा और स्वरूप; मनोविश्लेषणवाद : अवधारणा और स्वरूप; उत्तरआधुनिकता और हिन्दी साहित्य।

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- विभ्रम और यथार्थ – क्रिस्टोफर कॉडवेल
- साहित्य और इतिहास-दृष्टि – मैनेजर पाण्डेय
- हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – बच्चन सिंह
- हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
- भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ और प्रस्तवनाएँ – के॰ सच्चिदानन्दन
- उत्तर आधुनिकता : बहुआयामी संदर्भ – पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु'

सेमेस्टर-IV DEC-7

M24-HIN-406 विश्व साहित्य

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

विश्व साहित्य की विविध परंपराओं, विचारधाराओं और वैश्विक साहित्यिक प्रवृत्तियों की समग्र समझ विकसित करना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

406.1 छात्र विश्व साहित्य की प्रमुख धाराओं, आंदोलनों और विकास क्रम को समझ सकेंगे।

406.2 वे भारतीय साहित्य की तुलना में विश्व साहित्य की विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।

406.3 अनूदित और डिजिटल साहित्य की भूमिका, सीमाएँ और संभावनाएँ स्पष्ट कर सकेंगे।

406.4 प्रतिनिधि विदेशी कथाकारों और उपन्यासकारों की रचनाओं का आलोचनात्मक अध्ययन कर सकेंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 48 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु ऐसे व्यावहारिक विषय निर्धारित किए जाएं, जो वैश्विक साहित्यिक प्रवृत्तियों, अनुवाद की भूमिका, डिजिटल युग में साहित्य की प्रकृति एवं सांस्कृतिक अंतर्संबंधों पर केंद्रित होकर विद्यार्थियों के आलोचनात्मक क्षमता, मौलिक चिंतन और विश्व साहित्य-बोध को समृद्ध करें।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 विश्व साहित्य की संकल्पना और उसका महत्व; विश्व साहित्य : परिचय और प्रमुख धाराएँ; विश्व साहित्य के प्रमुख साहित्यिक आंदोलनों का परिचय; साहित्य का वैश्वीकरण; विश्वसाहित्य के अध्ययन का महत्व एवं समस्याएँ; लोककथाओं से लेकर आधुनिक साहित्य तक विश्व साहित्य की यात्रा।

इकाई-2 विश्व साहित्य और भारतीय साहित्य : एक तुलनात्मक दृष्टि; अनूदित साहित्य : महत्व, सीमाएँ और चुनौतियाँ; वैश्वीकरण के युग में साहित्य की भूमिका; डिजिटल युग में विश्व साहित्य की उपलब्धता और विविधता; विश्वसाहित्य के अध्ययन में भारत की भूमिका।

इकाई-3 पोस्ट मास्टर (पुश्किन), एक लंबा निर्वासन (लियो टालस्टॉय), एक शर्त (एन्तान चेखव), दिल की आवाज (एडलर एलन पो), अंधों के देश में (एच॰ जी॰ वेल्स) कस्बे का डॉक्टर (फ्रेंज काफ्का)
[**विश्व के अमर कथाकार** : अनु॰ अनुराधा महेन्द्र; प्रतिनिधि कहानियाँ]

इकाई-4 **एकाकीपन के सौ वर्ष** : गाब्रिएल गार्सीया मार्केस (प्रतिनिधि उपन्यास)

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- विश्व के अमर कथाकार – अनु॰ अनुराधा महेन्द्र
- प्रेमचंद और गोर्की – शची रानी गुर्टू
- विश्व साहित्य की रूपरेखा – भगवतशरण उपाध्याय
- हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- विश्व साहित्य के क्लासिक उपन्यास – जंगबहादुर गोयल
- हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी

सेमेस्टर-IV DEC-8

M24-HIN-407 हिन्दी पत्रकारिता

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास, स्वरूप, सिद्धांतों, विधाओं और समकालीन चुनौतियों से परिचित कराते हुए उन्हें एक संवेदनशील, उत्तरदायी और व्यावसायिक पत्रकार के रूप में तैयार करना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

407.1 छात्र हिन्दी पत्रकारिता के ऐतिहासिक विकास और उसके सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव को समझ सकेंगे।

407.2 समाचार लेखन, संपादन, साक्षात्कार, रिपोर्टिंग जैसे पत्रकारिता के व्यावहारिक पक्षों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

407.3 विद्यार्थी रिपोर्टिंग, संपादन, साक्षात्कार, फीचर लेखन सहित पत्रकारिता के व्यावहारिक कौशल सीखेंगे।

407.4 वे डिजिटल और मोबाइल पत्रकारिता, सोशल मीडिया के प्रभाव तथा मीडिया कानून और सेंसरशिप से परिचित होंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 48 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु ऐसे व्यावहारिक विषय निर्धारित किए जाएं, जो विद्यार्थियों की विश्लेषण क्षमता, मौलिक चिंतन और पत्रकारिता-सम्बंधी दक्षताओं के विकास में सहायक सिद्ध हों।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 हिन्दी पत्रकारिता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि; स्वतंत्रता आंदोलन में हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका; स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद हिन्दी पत्रकारिता का विकास; समकालीन हिन्दी पत्रकारिता; विभिन्न विमर्श केन्द्रित पत्रकारिता।

इकाई-2 पत्रकारिता का स्वरूप, कार्य एवं महत्व; समाचार की परिभाषा, तत्त्व एवं संरचना; निष्पक्षता, सत्यनिष्ठा और पत्रकारिता की नैतिकता; समाचार स्रोत, सत्यापन और फेक न्यूज़ की चुनौती; प्रेस की स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व।

इकाई-3 रिपोर्टिंग : समाचार, अपराध, राजनीतिक, सांस्कृतिक और खेल रिपोर्टिंग; साक्षात्कार, फीचर लेखन, संपादकीय, स्तंभ; समाचार लेखन शैली और भाषा; समाचार संपादन : हेडिंग, लीड, अनुच्छेद संरचना; विज्ञापन और जनसंपर्क लेखन।

इकाई-4 प्रिंट, रेडियो, टेलीविजन और वेब पत्रकारिता का तुलनात्मक अध्ययन; सोशल मीडिया और नागरिक पत्रकारिता; डिजिटल मीडिया के टूल्स और प्लेटफ़ॉर्म्स; मोबाइल पत्रकारिता (MoJo); न्यूज़ पोर्टल, ब्लॉग और पॉडकास्ट की भूमिका; मीडिया कानून, सेंसरशिप और साइबर पत्रकारिता।

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- पत्रकारिता की चुनौतियाँ – गणेश मंत्री
- मीडिया में कैरियर – पुष्पेन्द्र कुमार आर्य
- हिन्दी पत्रकारिता – डॉ॰ कृष्ण बिहारी मिश्र
- पत्रकारिता के विभिन्न स्वरूप – ज्ञानेन्द्र रावत
- हिन्दी नवजागरण हिन्दी पत्रकारिता – मीना रानी बल
- हिन्दी पत्रकारिता का वृहद् इतिहास – डॉ॰ अर्जुन तिवारी
- हिन्दी पत्रकारिता : आलोचनात्मक इतिहास – डॉ॰ रमेश कुमार जैन

सेमेस्टर-IV DEC-8

M24-HIN-408 हिन्दी सिनेमा और रंगमंच

क्रेडिट : 4 अंक : 100

समय : 3 घण्टे परीक्षा अंक : 70, आंतरिक मूल्यांकन : 30

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

रंगमंच और हिन्दी सिनेमा के ऐतिहासिक, सैद्धांतिक, तकनीकी तथा सामाजिक आयामों का समग्र अध्ययन कर विद्यार्थियों को इन कला विधाओं की व्यापक समझ और विश्लेषणात्मक कौशल प्रदान करना है।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

408.1 विद्यार्थी रंगमंच और हिन्दी सिनेमा के विकास, स्वरूप एवं सामाजिक भूमिका को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे।

408.2 वे अभिनय, निर्देशन, संवाद लेखन, पटकथा लेखन जैसे तकनीकी पक्षों का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करेंगे।

408.3 विद्यार्थी हिन्दी साहित्य, रंगमंच और सिनेमा के अंतर्संबंधों का विश्लेषण कर सकेंगे।

408.4 21वीं सदी में रंगमंच और सिनेमा की चुनौतियों एवं संभावनाओं पर समालोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित कर पाएंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 12 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 48 अंक का होगा।
- **लघु-उत्तरीय प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात लघु-उत्तरीय प्रश्न दिए जाएंगे। परीक्षार्थी को किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर देना होगा। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 200 शब्दों में हो। प्रत्येक प्रश्न के लिए 04 अंक निर्धारित हैं। यह खण्ड कुल 16 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से छह वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 06 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु रंगमंच और हिन्दी सिनेमा से जुड़े ऐसे व्यावहारिक एवं विश्लेषणात्मक विषय निर्धारित किए जाएं, जिनसे विद्यार्थियों की कला-समझ, रचनात्मक क्षमता और समसामयिक विषयों पर आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास हो।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 रंगमंच : परिभाषा, स्वरूप और सैद्धांतिक आधार; भारतीय रंगमंच की परंपरा: 'नाट्यशास्त्र' से आधुनिक रंगमंच तक; हिन्दी रंगमंच का इतिहास; रंगमंच की सामाजिक भूमिका : नुक्कड़ नाटक, प्रयोगात्मक नाटक।

इकाई-2 सिनेमा और उसकी सैद्धान्तिकी; सिनेमा का स्वरूप, सरोकार एवं महत्त्व; हिन्दी सिनेमा का ऐतिहासिक विकास: मूक फिल्में से लेकर समकालीन सिनेमा तक; साहित्य, रंगमंच और सिनेमा का अंतर्संबंध; भूमंडलीकरण, बाजारवाद और डिजिटल युग में हिन्दी सिनेमा; हिन्दी साहित्य, समाज और सिनेमा: अंतर्संबंध।

इकाई-3 रंगमंच: अभिनय और संवाद लेखन, मंच सज्जा और प्रकाश व्यवस्था, निर्देशन की प्रक्रिया; सिनेमा: पटकथा लेखन, निर्देशन, छायांकन, संगीत एवं ध्वनि, संपादन, VFX, सेंसर बोर्ड और प्रोडक्शन हाउस की भूमिका; रंगमंच एवं सिनेमा समीक्षा की भाषा, दृष्टिकोण और शिल्प।

इकाई-4 21वीं सदी में रंगमंच और सिनेमा की चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ; हिन्दी कथा साहित्य पर आधारित फिल्मों का विश्लेषणात्मक अध्ययन; शिक्षा और जनतंत्र के लिए रंगमंच और सिनेमा की भूमिका; डॉक्यूमेंट्री फिल्मों की भूमिका।

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- भारतीय सिनेमा सिद्धान्त – अनुपम ओझा
- हिन्दी सिनेमा का इतिहास – संजीव श्रीवास्तव
- समय, सिनेमा और इतिहास – संजीव श्रीवास्तव
- हिन्दी सिनेमा के सौ वर्ष – नारायण सिंह राजावत
- साहित्य, सिनेमा और समाज – पूरन टंडन, सुनील कुमार
- समकालीन फिल्मों के आइने में समाज – सत्यदेव त्रिपाठी

सेमेस्टर-IV EEC

M24-HIN-417 प्रयोजनमूलक हिन्दी

क्रेडिट : 2 अंक : 50

समय : 2 घण्टे परीक्षा अंक : 35, आंतरिक मूल्यांकन : 15

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

विद्यार्थियों को कार्यालयी एवं तकनीकी सन्दर्भों में हिन्दी भाषा के प्रभावी, शुद्ध और व्यावहारिक प्रयोग के लिए सक्षम बनाना।

पाठ्यक्रम के अपेक्षित परिणाम

417.1 विद्यार्थी कार्यालयीन पत्राचार एवं प्रशासनिक लेखन के स्वरूपों को भलीभाँति समझ सकेंगे।

417.2 वे तकनीकी एवं पारिभाषिक शब्दावली का उपयुक्त प्रयोग करना सीखेंगे।

417.3 डिजिटल माध्यमों (जैसे ई-मेल, ई-गवर्नेंस, सोशल मीडिया) में हिन्दी के प्रयोग में दक्ष होंगे।

417.4 वे राजभाषा नीति और हिन्दी के वर्तमान क्रियान्वयन की चुनौतियों को विश्लेषित कर सकेंगे।

परीक्षा के लिए निर्देश

- **आलोचनात्मक प्रश्न** – निर्धारित पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाई से आंतरिक विकल्प सहित एक-एक प्रश्न दिया जाएगा। परीक्षार्थी को प्रत्येक इकाई से किसी एक प्रश्न का उत्तर आलोचनात्मक रूप में देना होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिए 07 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 28 अंक का होगा।
- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न** – समस्त पाठ्यक्रम में से सात वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिए 01 अंक निर्धारित है। यह खण्ड कुल 07 अंक का होगा।
- **आंतरिक मूल्यांकन** – नियत कार्य (Assignments/Project/Case Study) हेतु कार्यालयी लेखन, राजभाषा नीति, डिजिटल हिन्दी प्रयोग आदि पर आधारित व्यावहारिक एवं शोधपरक विषय निर्धारित किए जाएं, ताकि विद्यार्थियों की भाषा-प्रयोग दक्षता, विश्लेषण क्षमता एवं मौलिक अभिव्यक्ति का विकास हो।

पाठ्यक्रम

इकाई-1 कार्यालयी हिन्दी का उद्देश्य, स्वरूप व आवश्यकता; सामान्य हिन्दी और प्रशासनिक/कार्यालयी हिन्दी में भेद; राजभाषा अधिनियम, नियमावली और सरकारी आदेश; राजभाषा के क्रियान्वयन की प्रमुख समस्याएँ एवं समाधान; कार्यालयी कार्यों में हिन्दी की वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाएँ।

इकाई-2 व्यक्तिगत, औपचारिक एवं आवेदन पत्र; कार्यालयीन पत्र व्यवहार : आदेश, सूचना, विज्ञप्ति, अनुज्ञा पत्र, प्रतिवेदन; परिपत्र, ज्ञापन, संकल्प, अनुस्मारक; नोटशीट और फाइल नोटिंग का व्यवहार।

इकाई-3 सरकारी एवं अर्ध-सरकारी पत्र व्यवहार की भाषा शैली; ई-मेल लेखन का प्रारूप, शिष्टाचार एवं संरचना; रिपोर्ट, प्रेस नोट, विज्ञप्ति लेखन; पारिभाषिक शब्दावली: स्वरूप, उपयुक्तता, प्रशासनिक एवं तकनीकी शब्दों का हिन्दी में अनुवाद।

इकाई-4 हिन्दी टंकण के प्रमुख टूल्स: इनस्क्रिप्ट, रेमिंगटन, गूगल इनपुट टूल्स; यूनिकोड आधारित टंकण एवं फॉन्ट; कम्प्यूटर स्थानीयकरण में हिन्दी; ई-गवर्नेंस में हिन्दी की भूमिका; वेबसाइट, सोशल मीडिया, ब्लॉग में प्रयोजनमूलक हिन्दी का स्वरूप; एआई एवं ऑटोमेशन टूल्स (जैसे Google Translate, ChatGPT) का हिन्दी में उपयोग।

अनुशंसित संदर्भ ग्रन्थ

- कंप्यूटर और हिन्दी – हरिमोहन
- राजभाषा सहायिका – अवधेश मोहन गुप्त
- कार्यालय-कार्य विधि – रामचन्द्र सिंह सागर
- प्रशासन में राजभाषा हिन्दी – कैलाशचंद्र भाटिया
- प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूप – राकेश मिश्र
- प्रयोजनमूलक कामकाजी हिन्दी – कैलाशचंद्र भाटिया
- कार्यालय हिन्दी में प्रयोग की दिशाएँ – (सं॰) उमा शुक्ल

सेमेस्टर-IV Dissertation Work

M24-HIN-418 लघु शोध-कार्य

क्रेडिट : 12 कुल अंक : 300

[शोध प्रबंध : 200; मौखिकी : 100]

🎯 लघु शोध-कार्य का उद्देश्य (Objective of the Research Work)

लघु शोध-कार्य का उद्देश्य विद्यार्थियों में अनुसंधान की बुनियादी प्रवृत्तियों का संवर्धन करते हुए उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मौलिक चिंतन, तार्किक विश्लेषण, आलोचनात्मक विवेक, सृजनात्मक भाषा-संयोजन एवं बौद्धिक ईमानदारी *(Intellectual Integrity)* का विकास होता है। यह कार्य उन्हें स्वतंत्र शोध हेतु आवश्यक वैचारिक अनुशासन, संप्रेषणीयता तथा वैश्विक शैक्षणिक मानकों की सम्यक् समझ प्रदान करता है, जिससे वे जिज्ञासु एवं नवाचारशील शोध दृष्टिकोण का विकास करते हैं।

इस प्रक्रिया के अंतर्गत छात्र अनुसंधान के सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक पक्षों से परिचित होते हैं। वे साहित्य-समीक्षा, साक्ष्य-आधारित लेखन, तुलनात्मक अध्ययन, सांस्कृतिक विश्लेषण, दस्तावेजीय अनुशीलन, साक्षात्कार एवं सर्वेक्षण आधारित विश्लेषण जैसी विधियों को अपनाकर अपने बौद्धिक क्षितिज का विस्तार करते हैं। यह शोध-अवसर विद्यार्थियों में अंतर्विषयी संवेदनशीलता *(Interdisciplinary Sensibility)*, शैक्षणिक स्वायत्तता *(Academic Independence)* तथा वैश्विक अनुसंधान दृष्टि *(Global Research Temperament)* का बीजारोपण करता है, जिससे वे भविष्य में डॉक्टोरल अनुसंधान, अकादमिक लेखन, नीतिनिर्धारण, संचार, संस्कृति तथा साहित्य-अध्ययन के विविध क्षेत्रों में उत्तरदायी भूमिका निभा सकें।

📘 लघु शोध प्रबंध: मार्गदर्शिका एवं मूल्यांकन निर्देशिका (Guidelines and Evaluation Framework For Dissertation)

- ☞ **विषय चयन (Topic Selection)** – शोध निर्देशक के निर्देशन में विद्यार्थियों को ऐसा विषय चुनना होगा जो उनकी रुचि, सामाजिक-सांस्कृतिक/साहित्यिक प्रासंगिकता, नवीनता एवं शोधोपयोगिता की दृष्टि से उपयुक्त हो। विषयवस्तु में स्रोत-सामग्री की उपलब्धता एवं मौलिक शोध की संभावना होनी चाहिए। शोध विषय केवल शोध निर्देशक की लिखित संस्तुति के उपरांत ही मान्य होगा।
- ☞ **प्रस्तावना (Synopsis)** – शोध प्रारंभ करने से पूर्व एक संक्षिप्त शोध-प्रस्ताव (Synopsis) प्रस्तुत करना अनिवार्य होगा। विभाग चाहे तो इसके लिए एक निर्धारित प्रारूप (Template) प्रदान कर सकता है। शोध प्रस्ताव में निम्न बिंदुओं का स्पष्ट समावेश अपेक्षित है— *1. शोध का उद्देश्य 2. शोध समस्या की प्रकृति और सीमा 3. अनुसंधान पद्धति 4. संभावित अध्याय विभाजन 5. प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों की सूची।*
- ☞ **शोध पद्धति (Research Methodology)** – शोधकार्य में प्रयुक्त विधियाँ संदर्भ, उद्देश्य एवं विषयवस्तु की अनुकूलता के अनुरूप हों, जैसे— *(i) दस्तावेज़ीय विश्लेषण (Documentary Analysis), (ii) पाठ विश्लेषण (Textual Analysis), (iii) तुलनात्मक अध्ययन (Comparative Study), (iv) साक्षात्कार (Interview), (v) सर्वेक्षण (Survey), (vi) सांस्कृतिक विश्लेषण (Cultural Analysis), (vii) अंतर्वस्तु विश्लेषण (Content Analysis), (viii) प्रकरण अध्ययन (Case Study)*। प्रत्येक चयनित पद्धति का औचित्य स्पष्ट करते हुए उसकी प्रासंगिकता प्रमाणित की जाए।
- ☞ **लेखन प्रारूप (Formatting Guidelines)** – शोध-प्रबंध यूनिकोड आधारित देवनागरी फ़ॉन्ट (जैसे– Mangal या Arial Unicode MS) में टंकित हो। सामान्य पाठ का फ़ॉन्ट आकार 12 प्वाइंट हो; अध्याय शीर्षक 14 प्वाइंट, बोल्ड और केंद्रित (center aligned) हों। पाद-टिप्पणियों हेतु फ़ॉन्ट साइज़ 10 हो। पंक्ति-दूरी 1.25 रहे। पृष्ठ सीमांत (Margins) – बाएँ 1.25 इंच, अन्य तीनों ओर (दाएँ, ऊपर व नीचे की ओर) 1 इंच हो। केवल यूनिकोड फ़ॉन्ट स्वीकार्य हैं; कृतिदेव, चाणक्य जैसे गैर-यूनिकोड फ़ॉन्ट अमान्य होंगे। प्रत्येक अध्याय के अंत में संक्षिप्त उपसंहार अपेक्षित है।
- ☞ **शब्द सीमा (Length of Dissertation)** – लघु शोध प्रबंध की अनुशंसित सीमा 70–90 पृष्ठ है; आवश्यकता अनुसार सीमा में लचीलापन रखा जा सकता है। शीर्षक-पृष्ठ, प्रमाणपत्र, स्वीकृति-पत्र, अनुक्रमणिका एवं परिशिष्ट इस सीमा में शामिल नहीं माने जाएँगे।
- ☞ **संदर्भ/ग्रन्थ सूची (Bibliography/References)** – शोध में MLA *(Modern Language Association)* – *9वें संस्करण* के अनुसार इन-टेक्स्ट उद्धरण *(In-text citation)* एवं क्रमिक पाद-टिप्पणियाँ *(Footnotes)* अनिवार्य हैं। संदर्भ सूची में समस्त पुस्तकों, शोध लेखों, वेब स्रोतों, पत्रिकाओं, साक्षात्कार आदि को विधिवत् वर्गीकृत कर प्रस्तुत किया जाए।

☞ **स्वतंत्रता और मौलिकता (Originality and Integrity)** – शोधकार्य पूर्णतः मौलिक, स्वतंत्र एवं बौद्धिक ईमानदारी पर आधारित होना चाहिए। किसी प्रकाशित/अप्रकाशित स्रोत से प्राप्त सामग्री को बिना उद्धरण अथवा संदर्भ के प्रस्तुत करना सर्वथा अनुचित है। साहित्यिक चोरी (Plagiarism) अथवा अनधिकृत AI-जनित सामग्री का उपयोग शोध अस्वीकृति का आधार बनेगा। शोध नैतिकता का अनुपालन अनिवार्य है।

☞ **सारांश (Abstract)** – शोध का सारांश 300–500 शब्दों में लिखा जाए तथा यह शोध विषय की भाषा में हो। इसमें शोध विषय की पृष्ठभूमि, उद्देश्य, अनुसंधान पद्धति, निष्कर्ष एवं शोध की प्रासंगिकता स्पष्ट रूप से संक्षेपित हो। इसकी भाषा सुस्पष्ट, प्रेरक एवं प्रमाणिक हो; अनावश्यक उद्धरणों या विवरण से परहेज़ किया जाए। इसे अनुक्रमणिका से पूर्व तथा भूमिका से पहले स्थान दिया जाए। इसमें अग्रबिंदु शामिल हों: *1. शोध विषय की संक्षिप्त पृष्ठभूमि, 2. शोध उद्देश्य और समस्या, 3. अनुसंधान पद्धति का उल्लेख, 4. प्रमुख निष्कर्ष, 5. शोध की प्रासंगिकता और संभावित योगदान।*

☞ **प्रस्तुति की अंतिम तिथि (Submission Deadline)** – विभाग द्वारा घोषित निर्धारित तिथि तक शोध प्रबंध प्रस्तुत करना अनिवार्य है। विलंब की स्थिति में केवल विभागाध्यक्ष/प्राचार्य की लिखित अनुमति के उपरांत विलंब स्वीकृत हो सकता है।

☞ **मूल्यांकन पद्धति (Evaluation Method)**

❒ ***शोध प्रबंध (Dissertation)*** **(200 अंक) :** आंतरिक एवं बाह्य परीक्षक द्वारा संयुक्त रूप से मूल्यांकन किया जाएगा। मूल्यांकन के प्रमुख मानदंड: *(i) मौलिकता और प्रासंगिकता, (ii) संरचना एवं भाषिक स्पष्टता, (iii) सैद्धांतिक विवेचन एवं विश्लेषण की गहनता, (iv) संदर्भों की प्रमाणिकता एवं नैतिकता।*

❒ ***मौखिकी परीक्षा (Viva-Voce)*** **– 100 अंक :** बाह्य परीक्षक द्वारा मौखिक परीक्षा आयोजित की जाएगी, जिसमें शोधार्थी को PowerPoint अथवा मौखिक प्रस्तुति के माध्यम से निम्न बिंदुओं की प्रस्तुति अपेक्षित है: *(i) शोध का उद्देश्य, (ii) अनुसंधान प्रक्रिया, (iii) प्रमुख निष्कर्ष, (iv) भावी अनुसंधान की संभावनाएँ (Scope for Further Research)।*

📚 लघु शोध प्रबंध की अनिवार्य संरचना (Essential Components of Dissertation)

1. **शीर्षक पृष्ठ** *(Title Page)*
2. **शोध निर्देशक व शोधार्थी का प्रमाणपत्र** *(Certificate by Supervisor & Student)*
3. **स्वीकृति-पत्र** *(Acknowledgement)*
4. **अनुक्रमणिका** *(Table of Contents)*
5. **सारांश** *(Abstract, **300–500 शब्द**)*
6. **भूमिका** *(Introduction)*
7. **शोध उद्देश्य एवं प्रासंगिकता** *(Research Objectives & Relevance)*
8. **शोध पद्धति** *(Research Methodology)*
9. **विषय-वस्तु का अध्यायानुसार विवेचन** *(Chapter-wise Discussion) (अध्याय आधारित प्रस्तुति/विश्लेषण)*
10. **शोध निष्कर्ष** *(Findings/Conclusion)*
11. **अनुसंधान की संभावनाएँ** *(Recommendations)*
12. **परिशिष्ट** *(Annexure – यदि कोई हो)*
13. **संदर्भ/ग्रंथ सूची** *(Bibliography/References)*
14. **शोध निर्देशक की टिप्पणी** *(Supervisor's Remarks)*